ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

अष्टांगयोगादेव तु आत्मशुद्धिः

राष्ट्र,धर्म व मानवता के सबल रक्षक-
वेद, यज्ञ-योग-साधना केन्द्र आत्मशुद्धि आश्रम
बहादुरगढ़ की मासिक पत्रिका

दिसम्बर 2018

मूल्य 15 रू.

आत्म-शुद्धि-पथ

मासिक

प्रथम चित्र में- कैप्टन महेन्द्र सिंह जी पवार पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी मुख्यधिष्ठाता आश्रम के 83वें जन्मदिवस 20 नवम्बर के शुभ अवसर पर सेवार्थ एक ई-रिक्शा आश्रम को भेंट की। जिसकी कीमत 1 लाख 16 हजार रूपये है।

द्वितीय चित्र में- Jyotsha Asul एवम् श्री सचिन राठी यूकोहामा इंडिया प्राइवेट लिमिटेड कम्पनी ने आत्मशुद्धि आश्रम में बच्चों के लिए कुर्तों पजामों हेतु 63000/- रूपये की धनराशि चैक द्वारा आश्रम को भेंट की। दोनों दान दाताओं का हार्दिक धन्यवाद!!!

आर्य समाज के संस्थापक, वेदों के उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती

आत्मशुद्धि आश्रम संस्थापक कर्मयोगी पूज्य श्री आत्मस्वामी जी महाराज

साहित्यकार जयदेव की इच्छा का सम्मान, परिजनों ने किया देहदान

श्री रविन्द्र हसीजा जी एवम् श्री धर्मवीर हसीजा जी इस अवसर पर आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य बनें।

कुछ लोग जीते जी भी समाज को अपने आचार-विचार से एक संदेश देते हैं और मरने के बाद भी वे समाज के लिए मिसाल बन जाते हैं। जीते जी शिक्षा का दान करने वाले साउथ सिटी-1 निवासी जयदेव हसीजा 'प्रेमी' ने दुनिया से अंतिम विदा लेते हुए देहदान कर समाज के सामने ऐसी ही मिसाल पेश की है। देहदान के उनके सपने को परिजनों ने पूरा किया। साहित्य और समाज से गहरा नाता रखने वाले जयदेव के पुत्र रविन्द्र हसीजा ने बताया कि शुक्रवार सुबह 4 बजकर 50 मिनट पर उनका देहांत हुआ। उनके पिता की अंतिम इच्छा थी कि उनका शरीर देहावसान के उपरांत दान कर दिया जाए ताकि किसी जरूरतमंद के काम आ सके। उनकी इच्छा का सम्मान करते हुए देहावसान के बाद उनका शरीर दधिचि देहदान समिति के सहयोग से एम्स में भेज दिया गया।

साहित्य के जरिए समाज को जागरूक किया: शहर के प्रमुख साहित्यकारों में स्थान रखने वाले जयदेव हसीजा ने दो दर्जन से ज्यादा साहित्यिक पुस्तकों का लेखन और संपादन किया। 'यादों की परछाइयां' व 'गायत्री वैभव' समेत 20 पुस्तक लिखने वाले हिंदी के साथ-साथ उर्दू और अंग्रेजी भाषा के जानकार जयदेव हसीजा की पुस्तक 'बीसवीं सदी का चाणक्य: सरदार वल्लभभाई पटेल' ने राष्ट्रीय स्तर पर उनको पहचान दिलाई थी। इसी पुस्तक के लिए उन्हें साल 2008 में गुजरात के तत्कालीन मुख्यमन्त्री नरेन्द्र मोदी द्वारा सम्मानित किया गया था। साहित्य के अलावा 'वनवासी कल्याण आश्रम' व 'आर्य समाज वेद मंदिर साउथ सिटी-1' समेत कई संस्थाओं के जरिए सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाने वाले हसीजा गांव झाड़सा स्थित महर्षि दयानन्द प्राथमिक विद्यालय के भी संस्थापक सदस्य रहे। शहर में अंगदान के प्रति बढ़ा है लोगों का रूझान:-दधिचि देहदान समिति के प्रदेश अध्यक्ष कन्हैया लाल आर्य के मुताबिक पिछले कुछ वर्षो से साइबर सिटी में अंगदान व देहदान करने वालों की संख्या में वृद्धि हो रही है। शिवाजी नगर निवासी 78 वर्षीय चंद्रकांता आर्या और 96 वर्षीय यमुना देवी सरीखी पुरानी पीढ़ी के लोग अंगदान कर लोगों के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं।

आत्मशुद्धि-पथ के नये आजीवन सदस्य बनें

1070
श्रीमती कमलेश कुमारी
धर्मपत्नी श्री सुरेन्द्र कुमार
विन, विजयलक्ष्मी अपार्टमेन्ट
दिल्ली

1071
श्री मोहित कादयान
सुपुत्र श्री अनिल कादयान
सैक्टर-6, बहादुरगढ़

प्रिय बन्धुओं! मास दिसम्बर में अधिक से अधिक संरक्षक सदस्य एवं आजीवन सदस्य बनकर आगामी जनवरी अंक को अपने चित्र व नाम से पत्रिका को सुशोभित करें। सभी सदस्यों से निवेदन है कि वार्षिक शुल्क (मनीऑर्डर/ड्राफ्ट) द्वारा शीघ्र भेजें अथवा इलाहाबाद बैंक कोड संख्या IFSC-ALLA0211948 में खाता संख्या 20481973039 में सीधे जमा कर सकते हैं। जिससे पत्रिका आपके पास निरन्तर पहुँचती रहे। - व्यवस्थापक

॥ ओ३म् ॥

आत्म-शुद्धि-पथ (मासिक)

मार्गशीर्ष-पौष   सम्वत् 2075   दिसम्बर 2018

सृष्टि सं. 1972949119   दयानन्दाब्द 194

वर्ष-17) संस्थापक-स्वर्गीय पूज्य श्री आत्मस्वामी जी (अंक-12

(वर्ष 48 अंक 12)

प्रधान सम्पादक

स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी' (मो. 9416054195)

सम्पादकः

श्री राजवीर आर्य (मो. 9811778655)

सह सम्पादकः

आचार्य विक्रम देव (मो. 9896578062)

परामर्श दाताः गजानन्द आर्य

कार्यालय प्रबन्धक

आचार्य रवि शास्त्री (मो. 08053403508)

उपकार्यालय

अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम

खेड़ा खुर्रमपुर रोड, फर्रुखनगर, गुडगांव (हरि.)

सदस्यता शुल्क

संरक्षक	: 7100 रुपये
15 वर्ष के लिए	: 1500 रुपये
पंचवार्षिक	: 700 रुपये
वार्षिक	: 150 रूपये
एक प्रति	: 15 रुपये

विदेश में

वार्षिक : 20 डालर   आजीवन : 350 डालर

कार्यालय : आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

जिला-झज्जर (हरियाणा) पिन-124507

चल. : 9416054195

E-mail : atamsudhi@gmail.com,

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ सं.
आश्रम समाचार/समाचार	4
तेरी वंदना के गीत गाता हूँ।	8
दड़ मार रहा पाखंड व अंधविश्वास पुनः जागृत....	9
विचारों की प्रचंड शक्ति	10
ईश्वर सुनता है	11
यज्ञ एक वैज्ञानिक विवेचन	13
अदृश्य बन्धन	14
परिवार सुखी कैसे हो?	16
तुलसी	22
कार्य कठिन नहीं होता, कमजोर सोच होती है	23
हंसो और हंसाओ	24
ऋषि के गुणों को याद करो/परनिन्दा से बचो	25
तन्त्र-मन्त्र का पाखण्ड	26
अमर हुताम्मा स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती	29
क्या आप जानते हैं	31
हमें इन पर नाज क्यों ना हो?	32
दान सूची	34

विज्ञापन दर

पिछला कवर पृष्ठ	5,100 रुपये
अंदर का कवर पृष्ठ	3,100 रुपये
पूरा पृष्ठ अंदर	2,100 रुपये
आधा पृष्ठ	1,100 रुपये
चतुर्थ भाग	600 रुपये

समस्त सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। 'आत्मशुद्धिपथ' में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायक्षेत्र बहादुरगढ़, जि. झज्जर होगा।

स्वामी जी का 83वां जन्मदिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया

आत्मशुद्धि आश्रम के मुख्यअधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी का जन्म दिवस प्रेरणा दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम प्रात: 8 बजे से बृहद् यज्ञ के साथ प्रारम्भ हुआ जिसमें यजमान कर्नल राजेन्द्र सिंह जी सहरावत थे प्रात: कालीन सत्र में नेत्र चिकित्सा, सत्संग व भजनों का कार्यक्रम रहा जिसमें वानप्रस्थी मनुदेव, हरिषमुनि व पुरुषार्थ मुनि ने भजनों के माध्यम से स्वामी जी की दीर्घायु के लिए मंगल कामना की। 100 से भी अधिक व्यक्तियों ने नेत्र चिकित्सा जिसका आयोजन श्री देव शर्मा के सुपुत्र प्रि. नरेन्द्र द्वारा किया गया था। इस चक्षु: यज्ञ में वेणु नेत्र चिकित्सालय दिल्ली से वरिष्ठ डॉक्टरों का पैनल आया था। सांयकालीन सत्र में आर्य जगत् के मुर्धन्य संन्यासी स्वामी चितेश्वरानन्द महाराज के सानिध्य में बृहद् यज्ञ का आयोजन किया स्वामी जी ने कहा कि स्वामी धर्ममुनि महाराज ने अपना सारी आयु परोपकार के कार्यों में लगाकर मानव जाति का बहुत बड़ा कल्याण किया है, इनका अच्छा स्वास्थ्य व लम्बी आयु प्राप्त हो हमारी सब की यह शुभकामनाएं है। इस अवसर पर सुर और संगीत का भव्य कार्यक्रम हुआ। गुरुकुल लौवां कलां की ब्रह्मचारिणीयां, श्री भगवान् दास, पं. जयभगवान आर्य, हरिष मुनि जी, पं. रमेश जी, युवा गायक कुलदीप भास्कर द्वारा मधुर भजनों का कार्यक्रम रखा। वेदान्त आश्रम परनाला के स्वामी देवेन्द्रानन्द गिरी राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सन्त समाज हरिद्वार ने भी स्वामी धर्ममुनि जी के अच्छे स्वास्थ्य व दीर्घायु की मंगल कामना की। विद्वान संन्यासी स्वामी रामानन्द जी ने भी स्वामी जी के जन्म दिवस को प्रेरणा के रूप में ग्रहण करने के लिए श्रोताओं को आह्वान किया। दोनों समय सुन्दर भोजन क्रि व्यवस्था कि गई थी। जन्म दिवस कार्यक्रम की सम्पूर्ण व्यवस्था में आचार्य चांद सिंह, आचार्य विक्रम जी ब्र. कर्ण, ब्र रणाधीर और ब्र. जगमिन्दर का विशेष योगदान रहा। कैप्टन महेन्द्र सिंह पंवार जी ने इस अवसर पर सेवार्थ एक ई-रिक्शा आश्रम को भेंट की जिसकी कीमत 1,16,000/- है। इस पर सभी ने कैप्टन साहब का धन्यवाद किया। सारे कार्यक्रम का कुशल संचालन आश्रम के ट्रस्टी राजवीर आर्य ने किया। अन्य मुख्य वक्ताओं में श्री सत्यपाल वत्स जी व आश्रम के उपप्रधान श्री कन्हैयालाल आर्य जी रहे। इन्होंने भी स्वामी जी के अच्छे स्वास्थ्य व दीर्घायु कि कामना की। कार्यक्रम के अन्त में स्वामी धर्ममुनि जी ने सभी का ध न्यवाद किया। वेदपाठ-रविशास्त्री जी द्वारा किया गया। सायंकाल यजमान-सुरेन्द्र बुद्धिरता व खरबन्दा जी रहे। शान्तिपाठ व भोजन प्रसाद के बाद कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आप आत्मशुद्धि आश्रम को निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. आत्मशुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य व आजीवन सदस्य बनकर, वार्षिक सदस्य स्वयं बनकर व अपने हितैषियों को बनाकर, विज्ञापन देकर अपने किसी हितैषी की स्मृति में उनका जीवनचरित्र छपवाकर।
2. गुरुकुल के छात्रों को पुस्तकें, कॉपी, वस्त्र देकर और धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय आदि सेवाकार्यों में आर्थिक सहयोग देकर एवं भोजन के लिए आटा, दाल, चावल आदि खाद्य सामग्री भेजकर। गौशाला में गौदान एवं खल-चूरी, दाना, भूसा आदि भेज सकते हैं।
3. गुरुकुल के छात्रों में से किसी एक को गोद लेकर उसका सम्पूर्ण व्यय 1000/- रुपये मासिक के हिसाब से साल भर का 12000/- रुपये छात्रवृत्ति देकर आप सहयोग कर सकते हैं।
4. आश्रम में प्रातराश, मध्याहन् का भोजन, मध्याह्नोपरान्त जलपान एवं रात्रिकाल के भोजन का व्यय लगभग 3100/- रुपये है। हमारी हार्दिक इच्छा है कि 365 यजमान बनें। एक दिन का भोजन देकर भोजन समस्या का समाधान कर सकते हैं। कमरों के नाम लिखवाने के इच्छुक सम्पर्क करें : आपके प्रिय आत्मशुद्धि आश्रम में 1 कमरा 31000/- 1 कमरा 100000/-, आप सभी दानी महानुभावों से निवेदन है कि अपना अथवा अपने किसी स्वजन की स्मृति मध्य उनके नाम का पत्थर लगवाकर अपने स्वजन का नाम उज्ज्वल कर पुण्य एवं यश के भागी बनें। आश्रम की दूसरी शाखा अखेराम सरदारो देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्मपुर रोड, फर्रूखनगर, गुड़गांव के लिए भी सहयोग देकर उत्साहित करें।

धन्यवाद! -व्यवस्थापक आश्रमसम्पर्क सूत्र : 9416054195

अजमेर का त्रैवार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित एकमात्र उत्तराधिकारी संस्था परोकारिणी सभा अजमेर के 135वें ऋषि मेले पर एक साधारण अधिवेशन संख्या 124 के अनुसार डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी की अध्यक्षता में हुआ। साधारण अधिवेशन में कुल 23 न्यासियों में से 21 न्यासी उपस्थित हुए जिसमें डॉ. वेदपाल जी को सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित किया गया। साधारण अधिवेशन में उपस्थित सभी न्यासियों ने नव निर्वाचित प्रधान डॉ. वेद पाल जी को अधिकृत किया कि वह परोपकारिणी सभा की कार्यकारिणी घोषित करें। डॉ. वेद पाल जी ने अपने विवेक के आधार पर निम्नलिखित कार्यकारिणी घोषित की।

प्रधान-डॉ. वेदपाल जी, **संरक्षक**-श्री गजानन्द आर्य जी, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी, **उपप्रधान**-श्री ओममुनि जी, श्री शत्रुघ्न आर्य जी, श्री राजेन्द्र जिज्ञासु जी, **मन्त्री**-श्री कन्हैया लाल आर्य जी, **संयुक्त मन्त्री**-डॉ. दिनेश चन्द्र शर्मा जी, **कोषाध्यक्ष**-श्री सुभाष नवाल जी, **पुस्तकाध्यक्ष एवं प्रकाशन**-श्रीमती ज्योत्सना जी, **अन्तरंग सदस्य**-डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी, श्री वीरेन्द्र आर्य जी। शान्ति पाठ के साथ कार्यवाही सम्पन्न हुई।

डॉ. वेदपाल जी
प्रधान

श्री गजानन्द आर्य जी
संरक्षक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी
संरक्षक एवम् सम्पादक

श्री ओममुनि जी
उपप्रधान

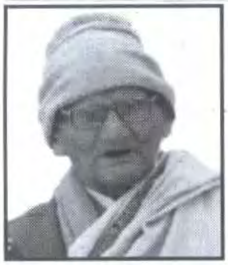

प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी
उपप्रधान

श्री शत्रुघ्न आर्य जी
उपप्रधान

श्री कन्हैयालाल आर्य जी
मन्त्री

डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा जी
संयुक्त मन्त्री

श्री सुभाष नवाल जी
कोषाध्यक्ष

श्रीमती ज्योत्स्ना जी
पुस्तकाध्यक्ष

डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी
अंतरंग सदस्य

श्री वीरेन्द्र आर्य जी
अंतरंग सदस्य

श्री रविन्द्र हसीजा जी एवं श्री धर्मवीर हसीजा जी को पितृशोक पूज्य पिता श्री जयदेव हसीजा जी का देहदान कर उदाहरण प्रस्तुत किया।

उद्योग जगत् के उभरते सितारे श्री रविन्द्र हसीजा एवं श्री धर्मवीर हसीजा जी के पिता श्री जयदेव हसीजा जी का निधन 30.11.2018 प्रात: 4 बजकर 50 मिनट पर हो गया। निधन के समय आयु 88 वर्ष थी। श्री हसीजा जी एक धार्मिक विद्वान, लेखक एवं उच्चकोटि के समाज सेवी थे। वे अपने पीछे दो पुत्रों श्री रविन्द्र (पूनम) हसीजा, श्री धर्मवीर (नेहा) हसीजा, दो पुत्रियाँ श्रीमती शशि चान्दना, श्रीमती कमलेश (सुरेन्द्र) विग को छोड़ कर गये हैं। उनके निधन के उपरानत श्री जयदेव जी हसीजा जी की इच्छानुसार उनका देहदान किया गया। परिवार ने उनकी इच्छानुसार उनका देहदान दधीचि देहदान समिति दिल्ली के माध्यम से ई.एस.आई.सी. मैडिकल कॉलेज तथा अस्पताल नेशनल हाइवे न. 3 एन.आई.टी. फरीदाबाद को किया गया। 30 नवम्बर 2018 को दोपहर 12 बजे शवयात्रा उनके निवास स्थान, जी-14 साऊथ सिटी-1 गुरुग्राम से प्रारम्भ की गई। शवयात्रा में अनेक संगठनों के सदस्य कार्यकर्त्ता, अधिकारी, अनेक गणमान्य व्यक्ति, सम्बन्धी एवं मित्रगण सम्मिलित हुए। ज्यों ही शवयात्रा घर से प्रारम्भ हुई वैसे ही ओ३म् ध्वनि, गायत्री मन्त्र एवं महामृत्युञ्जय मन्त्र की ध्वनि आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा दयानन्द मठ रोहतक द्वारा भेजे गये वैदिक प्रचार रथ के माध्यम से उच्चरित हो रही थी। जैसे ही शवयात्रा आर्य समाज वेद मन्दिर साऊथ सिटी-1 पहुँची वहाँ पर चलने वाले महर्षि दयानन्द सरस्वती प्राइमरी स्कूल के सभी छात्र एवं अध्यापिकाएं पंक्तिबद्ध हो कर आंखें नम किये हुए खड़े थे। आर्य समाज वेद मन्दिर साऊथ सिटी में वेद मन्त्रों के उच्चारण से श्री हसीजा जी का भौतिक शरीर दधीचि देहदान समिति दिल्ली के अधिकारियों को सौंपा गया। ज्यों ही यह भौतिक शरीर की यात्रा आर्य समाज से एम्स के लिए प्रस्थान किया वहाँ उपस्थित छात्र-छात्राओं ने श्री हसीजा जी अमर रहे के नारों से गुंजायमान कर दिया। परिवार के इस पवित्र संकल्प की वहाँ पर उपस्थित जन समुदाय न केवल हसीजा परिवार की प्रशंसा कर रहा था, अपितु मनों में मरणोपरान्त देहदान की इच्छा प्रकट कर रहा था। श्री हसीजा जी आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ एवं फर्रूखनगर, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, परोपकारिणी सभा अजमेर, गुरुकुल झज्जर, गुरुकुल भादस, वनवासी कल्याण आश्रम एवं असंख्य संगठनों के पदाधिकारी एवं सदस्य थे। आप एक उच्च कोटि के लेखक एवम् स्वाध्यायी व्यक्ति थे। उन्होंने लगभग एक दर्जन पुस्तकों का लेखन कार्य किया है। उनकी अन्तिम पुस्तक 'पागल मन की उड़ानें' का विमोचन उनकी अनुपस्थिति में 03.12. 2018 सोमवार को उनकी श्रद्धांजलि सभा में किया गया। वे जीवन के अन्तिम क्षणों तक समाज सेवा एवं लेखन कार्य से जुड़े रहे। वे इस समय आर्य समाज वेद मन्दिर झाड़सा साऊथ सिटी-1 एवं महर्षि दयानन्द प्राइमरी स्कूल वेद मन्दिर साऊथ सिटी-1 के वरिष्ठ उपप्रधान के पद को सुशोभित कर रहे थे।

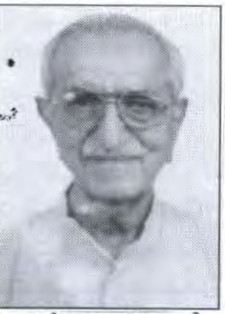

जयदेव हसीजा जी

स्मरण रहे कि श्री जयदेव हसीजा जी ने यह संकल्प 18 फरवरी 2018 को श्री कन्हैया लाल आर्य शिवा जी नगर गुरुग्राम की माता श्रीमती जमुना देवी आर्या के देहदान की श्रद्धाजंलि सभा में उनके पुत्र श्री रविन्द्र हसीजा से अपने संकल्प को प्रकट कर दिया था। आर्टीगिस अस्पाल में रूग्ण होने पर इसी दौरान वह अपने परिवार को देहदान की इच्छा प्रकट करते रहे। उनके इस संकल्प को साधुवाद। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति मिले और हसीजा परिवार एवं अन्य स्नेही सम्बन्धी, मित्रगण एवं कार्यकर्त्ताओं को इस दु:ख को सह करने की शक्ति मिले।

– कन्हैया लाल आर्य, उपप्रधान आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

आर्य सत्संग का आयोजन

आर्य समाज झज्जर में आर्य सत्संग का आयोजन किया गया जिसका प्रारंभ संसार के सर्वश्रेष्ठ कर्म यज्ञ द्वारा प्रारंभ किया गया जिसमें यजमान की भूमिका श्रीमती कांता जी (पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार) ने निभाई और यज्ञ ब्रह्मा पुरोहित प्रदीप शास्त्री ने परोपाकारार्थ यज्ञ को सम्पन्न कराया। इस अवसर पर आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ से पधारे आचार्य चांद सिंह जी, श्री चन्द्र जी ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि संसार में सभी मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र एवं फलपाने में परतन्त्र होते हैं। मनुष्यों को चाहिए कि वे वेदों को पढ़कर उनपर आचरण करें और जीवन में श्रेष्ठ कर्म अवश्य करते रहना चाहिए। संसार के तीनों दुःखों का निवारण वेद के पढ़ने और यज्ञ करने से हो जाता है अधिदैविक दुःखबाद अनावृष्टि, अनावृष्टि आदि होते है। आध्यात्मिक दुःख स्वयं की भूलों से उत्पन्न होते हैं। अधिभौतिक दुःख अन्य प्राणियों से मिलते हैं। इन सभी दुःखों से निवृत्ति करने के लिए यज्ञ, सत्संग, स्वाध्याय, पुण्य कर्म एक विशिष्ट कर्म करते हुए जीवन व्यतीत करना चाहिए। कृतकर्मो का फल अवश्य मिलता है इसलिए सोच विचार कर कर्म करते रहना चाहिए और समाज को उन्नत बनाते रहना चाहिए। अपने जीवन को संस्कारित करते हुए आगे बढ़ते रहना चाहिए। श्रीमती कांता जी ने अपने उद्‌बोधन में बताया कि यज्ञ करने से प्रदूषित वायु शुद्ध होकर सुंगधित हो जाती है और घरों से बीमारी दूर हो जाती है। यज्ञ करने से आत्मा प्रसन्न होकर श्रेष्ठ बनने के लिए मजबूर कर देती है। यज्ञ से अनेक सुखों की प्राप्ति हो जाती है। श्रेष्ठ मानव बनकर जीवन चलाए। इस अवसर पर श्री एच.एस. यादव, मा. पान सिंह, जयप्रकाश राठी, मा. द्वारका प्रसाद जी, भगवान जी, ओम प्रकाश, रमेश कौशिक, प्रकाशवीर, सूर्य प्रकाश, रामौतर, संदीप सिंह, आर्य, गावा जी, जीतेन्द्र जी कुसुम गुप्ता, शकुन्तला, प्रणव, सज्जन, गजेन्द्र जी आजाद दूहण जी।

शिक्षा के साथ संस्कार भी जरूरी-कुमारी पूनम आर्या

वैदिक सत्संग मंडल समिति झज्जर द्वारा चलाये जा रहे बेटी बचाओ अभियान व्याख्यान माला का 68वां कार्यक्रम सि. सैक्टर स्कूल ग्वालीसन रोड, फोर्टपुरा से आयोजित किया गया। जिसकी अध्यक्षता विद्यालय डायरेक्टर सुनील फोगाट व पं. रमेशचन्द वैदिक समिति अध्यक्ष ने की। कार्यक्रम का संचालन द्वारका दास समिति महासचिव व प्रधान आर्यसमाज झज्जर ने किया। मुख्यवक्ता पूनम कुमारी आर्या राष्ट्रीय अध्यक्ष बेटी बचाओ अभियान ने अपने सम्बोधन में कहा कि विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ संस्कार, चरित्र निर्माण, नैतिकता व सदाचार की शिक्षा देना भी अति आवश्यक है। ये गुण मनुष्य के आभूषण होते हैं। क्योंकि संस्कार हीनता के कारण ही सभी बुराईया समाज में फैल रही है। अच्छे संस्कार ही जीवन को महान बनाते है। शिक्षा और विद्या दोनों विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण का दायित्व माता-पिता और शिक्षक पर है। इन्हें अपना कर्तव्य सही ढंग से निभाना होगा। प्रवेश आर्या संयोजक राष्ट्रीय बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ की मुहिम को आगे बढ़ाने के लिए बेटियों के कोख में रक्षा और समाज में सुरक्षा का वातावरण बनाना अति आवश्यक है। बेटियों/महिलाओं पर बढ़ती हुई अत्याचारों की घटनाएं इस कार्यक्रम को बाछित कर रही है। बेटी है तो कल है ये नारा तभी सार्थक है। जब इसकी सुरक्षा की गारन्टी हो। समिति अध्यक्ष पं. रमेश वैदिक ने कहा कि विद्यार्थियों को नशे की लत से बचाना अति आवश्यक है। क्योंकि नशा आदमी के जीवन और परिवार को बर्बाद कर देता है। द्वारकादास महासचिव जितेन्द्र परमार बरानी ने भी बच्चों को शिक्षापद्र उद्‌बोधन दिया। प्रतिभाशली बेटियों को स्वामी दयानन्द सरस्वती रचित महान ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं अन्य वैदिक साहितय देकर सम्मानित किया। विक्रम सांगवान प्रचार्य सतबीर यादव, मुकेश देवी, ओमप्रकाश शर्मा, मंजीत, सूर्यवंशी कविता, राजेन्द्र आदि शामिल रहे।

तेरी वंदना के गीत गाता हूँ

- डॉ. रामनाथ वेदालंकार

अबोध्यग्निर्ज्म उदेति सूर्यो,
व्युषाश्चन्द्रा मह्यावो अर्चिषा।
आयुक्षातामश्विना यातवे रथ
प्रासावीद् देवः सविता जगत् पृथक्॥

ऋग् 1.157.1

ऋषिः **दीर्घतमा औचथ्यः**। देवते **अश्विनौ**। छन्दः **त्रिष्टुप् व्यूहेन जगती वा।**

(देखो) (**अग्निः**) अग्नि (**अबोधि**) प्रबुद्ध हुआ है, (**ज्मः**) भूमि से, क्षितिज से (**सूर्यः**) सूर्य (**उदेति**) उदित हो रहा है, (**चन्द्रा**) आह्लादक (**मही**) महिमामयी (**उषाः**) उषा ने (अर्चिषा) ज्योति से (**विआवः**) तमस् को निष्कासित कर दिया है, (**देवः**) प्रकाशक (**सविता**) सविता ने (**जगत्**) जगत् को (**पृथक्**) पृथक्-पृथक् (**प्रासावीत्**) प्रेरित कर दिया है। (**अब**) (**अश्विना**) प्राणापान (भी) (**यातवे**) प्रयाण के लिए (रथं) शरीर रथ को (**आयुक्षताम्**) नियुक्त करें।

देखो, अग्नि प्रबुद्ध हुई है। क्षितिज से सूर्य उदित हो रहा है। आह्लादक महिमामयी उषा ने ज्योति से तमस् को विच्छिन्न कर दिया है। काली निशा विदीर्ण हो चुकी है। सब प्राणी मोहमयी निद्रा का परित्याग कर जाग गये हैं। सविता देव ने जगत् को पृथक-पृथक अपने-अपने कार्यों में प्रेरित कर दिया है। प्रकृति में चहल-पहल दिखाई देने लगी है। चिड़ियाँ चहकने लगी हैं। पशु घास चरने लगे हैं। वनस्पति-जगत् भी सप्राण हो उठा है। तरू-लताओं की पत्तियाँ थिरक रही है। पुष्प सुगन्ध बखेर रहे हैं। उपवन सौरभ से महक रहा है।

हे मानव! ऐसे आह्लादमय वातावरण में भी क्या तू सोया ही पड़ा रहेगा? उठ, जाग, अपने अन्दर की तामसिकता की चादर को उतार फेंक। प्राणायाम-रूप अश्वीयुगल तेरे शरीर-रथ को प्रयाण के लिए नियुक्त करें। तू सत्कर्मों में प्रवृत्त हो। संध्यावन्दन कर, अग्निहोत्र की अग्नि प्रज्वलित कर, योगांगो का अभ्यास कर, प्राणायाम कर, योगासन कर, समाधि में बैठ, यज्ञ कर, अध्ययन कर, दान कर। अन्य जीवधारियों के शरीर-रथ में और तुझ मानव के शरीर-रथ में बहुत अन्तर है। कवि ने कहा है कि जो मानव साहित्य, संगीत एवं कला से विहीन है, वह पुच्छ-विषाण-हीन साक्षात् पशु है। स्वाभाविक रूप से तो प्राणापान रूप अश्वी युगल पशु-पक्षी आदियों के शरीर रथ को भी प्रयाण के लिए प्रवृत्त करते हैं। पर मानव को अपनी इच्छा-शक्ति का प्रयोग कर उन अश्वी-युगल द्वारा अपने रथ को विशेष दिशा में आगे बढ़ाना है। हे मानव! ये अश्वी-युगल रूप चालक तुझे बड़े भाग्य से मिले हैं, इनका तू सदुपयोग कर, इन्हें तू प्रेरित कर। ये तेरे रथ को वायुयान के चालकों के समान उन्नति की ओर उड़ाये चले जायेंगे। तू उदासीन मत हो, उपेक्षावृत्ति मत धारण कर, उद्बुद्ध हो, जागरूक बन और प्राणापान-रूप चालकों से रथ को सही दिशा में प्रवृत्त करा।

आश्रम द्वारा प्रकाशित महत्त्वपूर्ण साहित्य अवश्य पढ़ें

यज्ञ समुच्चय	मूल्य : 50 रु.
वैदिक सूक्तियों पर दृष्टान्त	मूल्य : 25 रु.
स्वस्थ जीवन रहस्य	मूल्य : 20 रु.
फल-सब्जियों द्वारा रोग नष्ट	मूल्य : 20 रु.
आत्मशुद्धि के सरल उपाय	मूल्य : 15 रु.
विद्यार्थियों के लाभ की बातें	मूल्य : 15 रु.
वृहद् जन्मदिवस पद्धति	मूल्य : 20 रु.
चाणक्य-दर्पण	मूल्य : 25 रु.
कल्याण-पथ	मूल्य : 20 रु.
प्राणायाम-विधि	मूल्य : 10 रु.
स्वादिष्ट प्रयोग चतुष्टय	मूल्य : 15 रु.

आश्रम द्वारा प्रकाशित साहित्य के साथ-साथ अन्य प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान : विक्रय केन्द्र, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला. झज्जर (हरियाणा)
पिन-124507, चलभाष : 09416054195

सम्पादकीय

दड़ मार रहा पाखंड व अंधविश्वास पुनः जागृत हो उठा है

- राजवीर आर्य

यही नहीं कि हिन्दु ही पाखंड व अंधविश्वास में फंसा हुआ है, बल्कि मुसलमान, सिख, ईसाई, जैनी आदि सब इसकी चपेट में आये हुए हैं। ऊपर से तो मुस्लिम मूर्ति पुजा का विरोध करते है, लेकिन स्वयं कबर, दरगाह, जादू वो भी काला, गंडे ताबीज-दुआ व इलम नाम से ढेरों अंधविश्वास इनमें प्रचलित है। सभी मत वाले किसी न किसी रूप में पाखंड व अंधविश्वास इनमें प्रचलति है। सभी मत वाले किसी न किसी रूप में पाखंड व अंधविश्वासों से ग्रस्त है। आजकल जो सबसे ज्यादा प्रचलन अंधश्रद्धा का है वह है गुरुवाद अर्थात् गरूड़म। आजकल बहुत से गुरु तो जेल की हवा खा रहे हैं आप सभी परिचित है। इस समय भी हजारों गुरूओं के आश्रम अड्डे व नरक धाम चल रहे है। हमें आश्चर्य होता है कि अनपढ़ व्यक्ति किस तरह से पब्लिक के पैसे से एक दो करोड़ की गाड़ी में चलते है। सब तरह के व्यसनों से इनका जीवन लदा हुआ होता है लेकिन फिर भी आंख के अंधे और गाठ के पुरे इनको मोज कराये ही जा रहे है। एक व्यक्ति निर्मल बाबा के नाम से प्रसिद्ध है, आपको जानकर आश्चर्य होगा कि प्रतिदिन उसके बैंक अकाऊन्ट में दो-ढाई करोड़ रूपया जमा हो जाता है। कोई योग्यता नहीं कोई विद्वता नहीं कोई शिक्षा नहीं लेकिन ठग विद्या से माला-माल हो गया। ईंट भट्ठा चलाया नहीं चला फिर जुतो की दुकान खोली नहीं चली अंत में रामपाल दास वाला फार्मुला अपनाया कि भारत वर्ष कि जनता को शीघ्र ही बेवकूफ बनाया जा सकता है। काला पर्स रखो अपना सेलून बदलो, कपड़ो का रंग बदलो, मिठाई कौन सी खाते हो, क्या कभी आगरे का पंछी पेड़ा खाया है? यह सब कुछ पूर्व आयोजित होता है। भीड़ के अन्दर इसके व्यक्ति बैठे हुये होते है। जिनमें महिलाए भी होती हैं और वे फिर खूब प्रचार करती है कहती है कि बाबा आपके बताये हुये प्रयोग से हमे यह लाभ हुआ है। हमारा स्वभाव भेड़ चाल का है विशेषतया माताओं का इनके स्वाभाविक सुहृदयता का गलत लाभ उठाना ये धुर्त बाबा जानते है। अपनी जादु की कला से तथाकथित चन्द्रा स्वामी जो कि दलाल था और देश का प्रधान मन्त्री तक इसके प्रभाव में थे, लेकिन पोल पट्टी खुलने की वजह से सत्य का ज्ञान होने पर इस तांत्रिक बाबा को जेल जाना पड़ा। क्यों ना अपनी शक्ति के बल से जेल से निकल गया? कारों के पीछे लिखा मिलता है गुरुजी घरों के आगे लिखा मिलता है गुरु जी का आशीर्वाद क्या नेता क्या अभिनेता क्या अधिकारी क्या चपरासी क्या पढ़ा लिखा क्या अनपढ़ लगभग सभी इन गुरुओं के चक्कर में पड़े हुये हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती इनको गुरु घंटाल कहते थे और चेतावनी देते थे कि तुम्हें भोली-भाली जनता को बहकाने का लूटने का कोई अधिकार नहीं है। आप एक बात ध्यान से विचारिये जीवन में सुख-दुःख, लाभ-हानि, जय-पराजय, रोग-अरोग्यता, जीवन-मृत्यु, यश-अपयश प्रत्येक मनुष्य को सामना करना पड़ता है जो इन तथा कथित गुरुओं को भी भोगना पड़ता है। फिर क्या विशेष गुण हमसे ज्यादा ये रखते हैं? स्वयं को परमात्मा से भी ऊंचा बताने वाले ढोंगियों ने कहा है "हरि भूले जग ठोर है गुरु भुले नहीं ठोर।" इनको यह भी जानकारी नहीं कि गुरु किसको कहते हैं? जो सत्य का ज्ञान कराये अविद्या को समाप्त करे उसे गुरु कहते है ये तो उल्टा असत्य का उपदेश और अविद्या का साम्राज्य स्थापित करते है। इतिहास आज भी कह रहा है और चिल्ला-चिल्ला कर कहा रहा है। सन् 712 में मोहम्मद बिन कासिम और राजा दाहिर के मध्य हुये युद्ध के हार का कारण पाखंड था। एक देश द्रोही पुजारी ने कासिम से मिल कर देवी के मन्दिर का झंडा झुका दिया जिसे देखकर राजा दाहिर और उसके सैनिकों का मनोबल टूट गया और जिती हुई बाजी दाहिर हार गया। इन गुरुओं के सामने चाहे किसी भी पार्टी की सरकार हो इनके आगे सभी नतमस्तक होते है। आश्चर्य की बात है कि बाबा के आगे 34-34 विधायक एक साथ आशीर्वाद लेने पहुँचते है जिसको एक आर्य न्यायधीश ने जेल कि हवा खाने के लिए भेज दिया। यह सब वोटों के लिए किया जाता है। रंगा खुश तो अवश्य जय होगी

इसलिए आशीर्वाद के बहाने मुलाकाते होती है। तुम हमारा ध्यान रखो हम तुम्हारा ध्यान रखेंगे। स्वार्थ सिद्धि के लिए जहां-जहां भी सहारा मिलता है, मनुष्य वही भागता है। श्रद्धा-अंधश्रद्धा में परिवर्तित हो जाती है। अज्ञानता के कारण सच्चे गुरु परमपिता को भुल कर इन कामी, क्रोधी और चमत्कार दिखाने वाले तथा कथित गुरुओं से हमे सावधान रहकर इनका वाणी से भी सत्कार ना करें और पाखंडो, भ्रमो, अंधविश्वासों और अंधश्रद्धा, अज्ञानता और अविद्या से बचने के लिए सत्यार्थ प्रकाश नामक ग्रंथ पढ़े। कितनी अज्ञानता है कि यात्रा से पहले वाहन के पहिये पर पानी छिड़कने से यात्रा सफल होती है। घर से निकलते समय वाहन चलाते समय अगर बिल्ली रास्ता काट जाये तो अपशुकन होता है। रात्री में चाबिया नहीं खटकारनी चाहिए इससे हानि होने की सम्भावना होती है। मनुष्य एक डरपोक प्राणी है इसलिए वह तन्त्र, मन्त्र और यन्त्र का सहारा लेता है। जबकि सत्य है कि तन्त्र अर्थात् वह विधि अपनाएं जिससे हमारा अमूक कार्य सफल हो जाये और मन्त्र है विचारा शक्ति अर्थात् अपने कार्य मनन करने के पश्चात् ही करे और यंत्र का नाम है उन उपकरणों अर्थात् साधनों का जिनके द्वारा हम अपने कार्य करने में सहायता लिया करते है जबकि मन्त्र, तन्त्र और यन्त्र के बहाने कुछ स्वार्थी व अधार्मिक लोग गृहस्थों को डराते है और अपनी दुकानदारी चलाते है। भिन्न-भिन्न कष्ट निवारण करने का झुंठा दावा करते है। हमने बताया कि बुद्धि पूर्वक विचार उचित विधि और यंत्रों का प्रयोग करके आप अपने कार्यों की सिद्धि या इनमें सफलता प्राप्त कर सकते है ना कि किसी अन्य द्वारा बताये गये डरावने व अविघा भरे ढंगों से/बुंद्धि पूर्वक व्यवहार करने से सभी कार्य सफल हाते हैं। सम्पादकीय लिखते समय खबर पढ़ी कि दुष्कर्म के एक मामले में दिल्ली में एक आशु महाराज पकड़ा गया। इसके पास दिल्ली में ही करोड़ों की सम्पत्ति मिली। आश्चर्य तो तब हुआ जब आशु महाराज आसिफ खान निकला। यह अपने पुत्र के साथ मिलकर लवजेहाद का षड्यंत्र चला रहा था। जिसके माध्यम से बहुत सी युवतियों का जीवन बर्बाद इन पिता-पुत्र द्वारा किया जा चुका है। कहते है-

एक ही उल्लू काफी था
बर्बाद-ए-गुलिस्ता करने को।
हर सांख पे उल्लू बैठा है
अंजामे गुलिस्ता क्या होगा।।

विचारों की प्रचंड शक्ति

- जगरूसिंह छिक्कारा आर्य

मनुष्य में पवित्र विचारों की दिव्य शक्तियां, ईश्वरीय ज्ञान (वेद) से प्राप्त की जा सकती है। संसार के लुभानेवाले आकर्षणों को देखकर इन्द्रियों के दास मत बनो, अपितु इन्द्रियों के स्वामी बनों। प्रत्येक इन्द्रिय का एक पाश मार्ग हैं और दूसरा व्रत का। व्रत का आचरण मनुष्य को उत्तररोत्तर शुद्ध बनाकर मोक्ष का अधिकारी बनाता है। यदि यह पवित्र विचार धारा न होते फिर मनुष्य के सब काम व्यक्ति और समाज में राजसी भावनाओं के द्वारा विषय-विकार, संघर्ष तथा भीषण दु:खों को ही जन्म देंगे।

जो मनुष्य जैसा विचार करता है, वह ठीक वैसा ही बन जाता है। जिन-जिन वस्तुओं का विचार तथा चिंतन किया जाएगा, वे वस्तुएँ निश्चित रूप से हमारे समीप चली आएगी। अत: जिसे हम प्राप्त करना चाहते हैं, सदा उसी का विचार करें। इन्हीं विचारों में निर्मलता लाने के लिए दो महान गुणों की प्रशंसा हमारे वेद शास्त्रों में भरी पड़ी हैं। वे हैं-दया तथा क्षमा। दया के विचारों से निर्मलता आती हैं तथा क्षमा से निर्मलता को स्थिरता प्राप्त होती है। बिना दया तथा क्षमा का भाव रखे, किसी को भी शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। सद्विचार तथा सद्भाव हमारी संपत्ति हैं। जिस दिन तुम्हें विचारों की शक्ति का ठीक-ठीक ज्ञान हो जाएगा, उसी दिन अनेक शंकाएं तथा समस्याएँ स्वत: हल हो जाएँगी। शुभ कर्म करने से भी अच्छे विचारों की संस्कारवर्धक शक्ति अधिक तीव्र होती है। जैसी बातें मनुष्य विचारेगा, कुछ समय के पश्चात्, वह स्वयं देखेगा कि उसके विचारों के अनुकूल ही उसका वातावरण बनता जा रहा है। जिन-जिन परिस्थितियों व वस्तुओं का उसने चिंतन किया है, वे उसके अधिकाधिक समीप आ पहुँचती हैं। मनुष्य अपने विचारों से ही उच्च तथा निम्न बनता है।

ईश्वर सुनता है

- पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

सश्रृणोत्यकर्णः। (उपनिषद्) सुने बिनु काना। (तुलसीदास) ईश्वर के कान नहीं। पर सुनता है। कैसे? मालूम नहीं। फिर क्या कारण है कि मनुष्य प्रार्थना करते हैं और उनकी कामनायें पूरी नहीं होती? जब इंग्लैण्ड के सम्राट् सातवें एडवर्ड बीमार हुए तो समस्त प्रजा की ओर से उनके लम्बे जीवन के लिए प्रार्थना की गई। सभी मन्दिरों, सभी गिरजाघरों सभी मस्जिदों में करोड़ों, मनुष्यों ने अपनी प्रार्थनाओं के तार ईश्वर की सेवा में उपस्थित किए परन्तु इंग्लैण्ड का सम्राट मृत्यु से न बच सका। लातीनी भाषा का एक वाक्य है 'वौक्स पौलूलाई, वौक्स डी आई' (Vox populi, Vex deii) अर्थात् मनष्यों की आवाज् ईश्वर की आवाज है। इसकी सत्यता में सन्देह किया जा सकता है क्योंकि यदि ऐसा होता तो बादशाहों की मृत्यु तो असम्भव हो जाती और विशेषकर दयालु और शीलवान बादशाहों की।

परन्तु मेरा विश्वास है कि ईश्वर सुनता है और अवश्य सुनता है। अभी सन् 1951 की घटना है। मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली का मन्त्री था। मेरे बक्स में 560 रूपये थे। मैं और मेरी पत्नी बक्स को दिल्ली में कमरे में बन्द करके प्रचारार्थ बाहर चले गए। बीस दिन के पीछे लौटे तो कमरा बन्द मिला परन्तु तीसरी मंजिल पर पीछे की ओर किसी ने चढ़कर दरवाजा खोल लिया और सब रूपये निकाल लिये।

एन धनी मित्र ने सुना। फोन पर कहा, ''सुना है कि तुम्हारे रूपये चले गये?''

हाँ बात तो ठीक है।'' 'फिर?''

''फिर क्या?'' ''मैं सोच रहा हूं कि 500 की थैली तुमको भेंट कर दी जाय। 100 मैंने देने का निश्चय किया है। अमुक मित्र ने 200, केवल 200 की कसर है।'' ''आपको धन्यवाद है। परन्तु मैं रूपया नहीं लूँगा। मुझे रूपये की जरूरत होती है तो ईश्वर से माँग लेता हूँ, किसी मनुष्य के समक्ष हाथ नहीं फैलाता।''

''इसीलिए ईश्वर आपको दे भी देता है?''

मैंने इस अन्तिम वाक्य का जो उत्तर दिया उस पर पाठकवर्ग विचार करें। मैंने कहा, ''यह ठीक है कि मैं ईश्वर से माँगता हूँ। ईश्वर सुनता है अवश्य सुनता है परन्तु यह आवश्यक नहीं कि वह सदा मेरी प्रार्थना स्वीकार ही करे। जब सच्चें हृदय से प्रार्थना करने पर भी मेरी कामनायें सिद्ध नहीं होती तो मैं समझ लेता हूँ कि मेरी कामनाओं की असिद्धि में ही मेरा हित था। ईश्वर सुनता अवश्य है। परन्तु यह आवश्यक नहीं कि मान भी ले। मैं प्रार्थना करता हूँ। आज्ञा तो नहीं देता।''

ईश्वर सुनता है और सहायता करता है। इस सम्बन्ध में मैं अपने जीवन की एक घटना सुनाता हूँ। वह भी बिजनौर की है। सन् 1907 के अन्त की।

मेरा वेतन 45 रूपये था। मैंने बीमा भी कराया था जिसमें 5 रूपये 19 आने 8 पाई प्रति मास कट जाते थे। घर 39 लाता था। घर में मैं था, मेरी पत्नी, मेरी माता, एक मेरे भाई सत्यव्रत, एक मेरी पत्नी के भाई विद्याभूषण। यह दोनों हाईस्कूल के विद्यार्थी थे। दो बच्चे थे। बड़ा सत्यप्रकाश ढाई वर्ष का। छोटा विश्वप्रकाश आठ नौ मास का। मैं बी. ए. की प्राइवेट परीक्षा की तैयारी कर रहा था। संस्कृत ली थी। एक पण्डित जी को टयूशन पर रखा हुआ था। और कोई आय न थी। 1907 में अकस्मात् अकाल पड़ गया। गेहूँ पहले रूपये के 13 या 14 सेर आते थे। अब इतने घटे कि 6 सेर से भी नीचे गिर गए। कुछ दिनों में मेरे ऊपर ऋण बढ़ गया था। तो मित्रों का ही, परन्तु था तो ऋण। यदि ऋण लेते जाओ और चुकाते भी जाओ तो कोई कठिनाई नहीं होती। परन्तु यदि ऋण लिया ही जाय और चुकाने का नाम भी न लिया जाय तो मित्रों में भी कुछ न कुछ भ्रान्ति की संभावना हो जाती है। फार्सी में कहते हैं कि ''कर्ज मिकराजे मुहब्बत'' है। अर्थात् ऋण से प्रेम की हत्या हो जाती है।

सर्वेषामस्ति शस्त्राणामृणच्छूरी भयंकरा।
छिनत्ति क्षणमात्रेण, प्रेमपाशं चिरन्तनम्॥

एक दिन मैंने हिसाब लगाया तो 150 रूपये ऋण हो गया। आय गेहूँओं के लिए भी पर्याप्त न होती थी। एक दिन वेतन मिला तो 26 रूपये के गेहूं लाया। शेष 13 में क्या करता? चिंता अधिक हो गई। मेरी स्त्री खाना पकाती थीं। अपनी चिंताओं को हम

दोनों ही अकेले में भोग लेते थे। किसी से कुछ कहते न थे। मैंने अपने सब खर्चे पर दृष्टि डाली। मेरी झुंझलाहट यदि समाप्त होती थी तो पत्नी पर और सुनने वाला भी कौन था?

"इतना अनाज कैसे खर्च हो जाता है?"

"क्या बताऊँ कैसे? हो तो जाता ही है। कोई बाहर का तो ले नहीं जाता।"

"यदि छब्बीस छब्बीस रूपये के गेहूँ खालेंगे तो कैसे काम चलेगा?"

"तुम कहते तो ठीक हो परन्तु मैं भी क्या करूँ?"

"कल से आटा तोलकर साना करो।"

"ऐसा ही करूँगी।"

परन्तु इसका कुछ अच्छा परिणाम न निकला। आज मैं उस सब बात का स्मरण करता हूँ तो पश्चताप होता है। मेरी अवस्था थी 27 वर्ष की। मेरी पत्नी की 21 वर्ष की। यह वह आयु है जिसमें नव-दम्पती खेलने खाने और मजे उड़ाने की सोचते हैं। यहां सर मुड़ाते ही ओले पड़े। करें तो क्या करें। कोई बात समझ में नहीं आई। उलझन बढ़ती गई। हम दोनों के लिए बराबर बराबर। हिसाब लगाता तो सोचता कि यदि 1 रूपये मासिक भी ऋण चुकाया जाय तो बारह वर्ष लगें और एक रूपया भी कैसे चुके?

ऋण बढ़ने की संभावना है। घटने की नहीं। ऋण भी आगे कौन देगा? समाज का साधारण चन्दा देना भी भारी हो गया। मेरा उन दिनों सम्बन्धियों के विवाहों में जाना भी बन्द था क्योंकि जाने आने के लिए धन चाहिए।

अब केवल एक ही साधन था, वह था ईश्वर से प्रार्थना। जब प्रातः सायं सन्ध्या करने बैठता तो नित्य ईश्वर से प्रार्थना करता कि "नाथ! कुछ भी विपत्ति दो। ऋण चुकाने का कोई साधन भेज दो।" एक मास बीत गया। न साधन दृष्टि में आया न प्रार्थना करना ही बन्द हुआ। प्रार्थना की सत्यता और तीव्रता बढ़ती गई। उसमें कोई कमी नहीं आई।

एक दिन एक आकस्मिक घटना हुई। उर्दू टीचर ने छुट्टी ली। हैडमास्टर महोदय का परवाना आया कि तुम अमुक अवकाश के अन्तर में अमुक कक्षा को पढ़ा दो। मैं चला गया। लड़को से पूछा।

"क्या पढ़ते हो?"

एक ने कहा "उर्दू कवायद।"

"मुझे एक कॉपी दो। मैं पढ़ाऊँ।"

मैं पुस्तक लेकर पढ़ाने लगा। वह पुस्तक नए ढंग की थी जिसमें उर्दू के व्याकरण को अंग्रेजी व्याकरण से मिलान करके लिखा गया था। इण्डियन प्रेस की छपी हुई थी। मैंने ऐसा व्याकरण पहले कभी देखा नहीं था। मेरा उर्दू और हिन्दी की शिक्षा से कोई सम्बन्ध भी न था।

मेरे मन में कुछ विचार उत्पन्न हुआ। झट से जेब से कार्ड निकाल कर इण्डियन प्रेस इलाहाबाद को लिखा।

"क्या आप इस प्रकार का हिन्दी व्याकरण भी छापेंगे?" दो तीन दिन के पीछे उत्तर आया, "पुस्तक लिखी हो तो भेज दो हम छापने को उद्यत हैं। क्या तुमने कोई पुस्तक कभी लिखी है?"

मैंने इससे पहले कोई पुस्तक नहीं लिखी थी। क्या उत्तर देता?

मैंने व्याकरण लिखना भी आरम्भ नहीं किया था। बिना किसी आशा के एक कार्ड लिख दिया था। मैंने उत्तर में गोल माल लिखा कि "कुछ पत्रों को लेख तो लिखता रहा हूँ। पुस्तक कोई नहीं लिखी। आप मेरा लिखा व्याकरण ही देख लें। और यह भी लिखें कि क्या रायल्टी देंगे।"

इधर तो पत्र डाला और उधर लिखने बैठा। प्रातः काल से लेकर रात को सोते समय तक लिखता। दस दिन बराबर मेरी लेखनी चलती ही रही। नहीं मालूम कि खाना भी मजे से खाया या नहीं। स्कूल अवश्य जाता परन्तु अवकाश के अनुसार वहाँ भी लिखता ही रहा।

इण्डियन प्रेस से उत्तर आया, "हम रायल्टी नहीं देते। पुस्तक देखकर बता सकेंगे कि क्या दे सकते हैं।"

हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्य वेत्ता पं. श्री पद्मसिंह जी शर्मा मेरे मित्र थे। एक दिन वे बिजनौर में आए। मैंने उनसे व्याकरण की चर्चा की और पूछा कि मुझे उसका क्या माँगना चाहिए। वह इन बातों से अपरिचित से प्रतीत हुए। उन्होंने कहा "पुस्तक भेज दो और मूल्य उन्हीं लोगों के निश्चय पर छोड़ दो।"

-प्रस्तुति डॉ. ज्वलन्त शास्त्री

यज्ञ एक वैज्ञानिक विवेचन

– आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, प्रधान सम्पादक-अध्यात्म पथ

किसी भी मांगलिक अवसर पर अपनी सफलताओं और उपलब्धियों पर संतोष व्यक्त करें ये नितान्त स्वाभाविक है। सामान्य बोलचाल की भाषा में कहा जाता है कि हम इस आयोजन को धूमधाम से करेंगे। धूमधाम से सामान्यत: यह अर्थ ग्रहण किया जाता है कि हम परस्पर इकट्ठे होकर एक पार्टी दें और झूमें और गावें। वस्तुत: धूमधाम एक महत्वपूर्ण शब्द है। जो दो शब्दों के मेल से बना है। धूम का अर्थ है-धुंआ, धाम का अर्थ है-स्थान। इसका अर्थ यही है, जिस स्थान पर यज्ञ का धुंआ हो, जहाँ यज्ञ का आयोजन हो, उसी को ही धूमधाम कहते हैं।

यज्ञाधीनं जगत् सर्वम् सारा संसार यज्ञ के अधीन है। जगत् को स्वस्थ तथा सुव्यवस्थित रखने के लिए यज्ञ का होना अनिवार्य है। आर्ष सिद्धान्त अग्नि से शोधक, विभाजक शक्ति मानता है क्योंकि अग्नि ऊर्ध्वमुखी, किन्तु सूर्य की गति को टेढ़ी गति मानते है, अग्नि में आहूत पदार्थ शीघ्र वायु मण्डल में फैल जाता है और सूर्य की किरणों तथा विद्युत शक्ति से घर्षण के कारण उसकी शक्ति असंख्य गुण बढ़ जाती है, जिससे प्रदूषणों का निवारण और रोगनाश होने लगते हैं। वैदिक साहित्य में धुओं और ज्योति को विशिष्ट माना है। **'धूम ज्योतिः सलिल मरूता सन्निपातः'** धुएँ और ज्योतिका सम्मिश्रण पाकर वायु और जल विशोधित होते हैं। अग्निहोत्र देवयज्ञ सूक्ष्मीकरण के सिद्धान्त पर आधारित हैं। हवनकुण्ड में अग्नि के दहन से औषधत्व आसक्ति होकर प्रकाश संश्लेषण और ऑक्सीकरण सिद्धान्त से असंख्य गुणा प्रभावशाली हो जाते हैं। हवन द्वारा उत्पादित तत्व असंख्य गुणा प्रदूषणों का निवारण करने में समर्थ है। जड़ी बूटी के होम से सुगन्धित, स्फूर्ति तथा शान्ति प्राप्त होती है। यज्ञीय ऊर्जा का यज्ञस्थल में चहुँ ओर प्रभाव प्राणी जगत् के लिए उपयोगी है। जो वस्तु खाने में एक व्यक्ति को लाभ देती है वही वस्तु उचित ताप में जलाने पर असंख्य लोगों के लिए प्रभावकारी होती है।

औषधियों को आग पर जलाने से उनमें विद्यमान तत्व ज्यों के त्यों हवा में फैल जाते हैं। उदाहरण के लिए दालचीनी में विद्यमान 61 प्रतिशत सिन्नोमिक, एल्डीहाईड तथा 10-12 प्रतिशत युजिनल रक्त में घुलकर उसे पतलाकर हृदय-आघात से रक्षा करने में सहायक है। इसी तरह अंजीर में विद्यमान 'फिसिन'' नामक तत्व आन्त्रकृमिनाशक है। इलायची में विद्यमान टपिर्निआल और सीनिआल तत्व शरीर के दर्द का नाशक है। भवन की सार्थकता भावना से है, गृह की सार्थकता गृहिणी (नारी) से है, होम की सार्थकता होम (हवन) से है।

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

यज्ञ की मूल भावना है परोपकार, तो हम अपनी प्रसन्नता में दूसरों को भी सम्मिलित करें, उनकी उपेक्षा न करें, यही यज्ञ हैं। अंग्रेजी में घर को होम कहा जाता है, कौन नहीं चाहता है कि घर में पावनता हो, यज्ञ से पावनता प्राप्त होती है तो वास्तव में होम के बिना कोई होम बन ही नहीं सकता। आज पर्यावरण प्रदूषण की समस्या विकराल रूप धारण किये हुए है। इसका निवारण यज्ञ से ही सम्भव है। अनार आदि वृक्षों का फल जब झड़ता है तब माली गुग्गल का धुंआ देकर ही उसके फल को उगाता है। यह हवन यज्ञ ही तो है।

यज्ञ (हवन) से लाभ- (1) पर्यावरण शुद्ध, पुष्ट एवं सुगन्धित होता है। (2) प्रदूषण दूर होकर आरोग्यता प्राप्त होती है। (3) दु:ख एवं दारिद्रय का नाश होता है। (4) मानसिक शान्ति की प्राप्ति और आनन्द की वृद्धि होती है। (5) सुविचारों का जन्म होता है, जिससे बुद्धि बढ़ती है। (6) सात्विक कार्यो की वृद्धि होती है। (7) शान्ति तथा सद्भाव का प्रचार होता है। (8) देवपूजा, संगतिकरण और दान होते हैं। (9) मानवीय कर्तव्य पालन होता है। महर्षि दयानन्द जी का कथन है-जबतक इस होम करने का प्रचार रहा तब तक आर्यावर्त देश रोगों से रहित और सुखों से परिपुरित आज भी प्रचार होते वैसा ही हो जाए।

यज्ञ आयुधारक है-**यथा-यदम्भ ये शुचये आयुरेवास्मिन तेन दधाति।** पवित्र अग्नि में जो आहुति दी जाती है उससे यज्ञ, यजमान को आयु धारण कराता है। अत: प्रत्येक व्यक्ति को यज्ञ करना चाहिए।

शरीर की शुद्धि के लिए स्नान, संपत्ति की शुद्धि के लिए दान, मन की शुद्धि के लिए ध्यान तथा पर्यावरण की शुद्धि के लिए यज्ञ का अनुष्ठान आवश्यक है।

- फ्लैट न. सी-1, पूर्ति अपार्टमेन्ट विकासपुरी,
नई दिल्ली-18, मो. 9810084806

अदृश्य बन्धन

- यश वर्मा

वेद का एक मन्त्र है:-

ओ३म् सख्ये त इन्द्र वाजिनो मा भमे शवसस्पते॥
त्वामभि प्रणोनुमो जेतारमपराजितम्॥

इस मन्त्र का अर्थ है 'हे बलों के भण्डार हम आपकी मित्रता को पाकर सदा बलवान बने रहें और कभी भी किसी से न डरें। प्रभु हम आपको बारम्बार प्रेम भरा नमस्कार करते हैं। आपकी कृपा से हमें सदैव विजय मिले, पराजय कभी नहीं।

इस मन्त्र में विशेष बात आई है कि हम कभी किसी से डरें नहीं। अरे भई डरें कैसे नहीं, सैकड़ों हजारों वर्षो से हमारे ग्रन्थों में लिख दिया गया। पंडितों और ज्योतिषियों ने स्वार्थवश खूब प्रचारित व प्रसारित किया कि इन बातों को नहीं मानोगे तो आपका अनिष्ट हो जाएगा, घोर अनर्थ हो जाएगा, नर्को में जाओगे। हमें करोड़ों मील दूर जो ग्रह नक्षत्र हैं उनसे डराया गया, राशियों से डराया गया, यहाँ तक कि बिल्ली से डराया गया। हमें अदृश्य भय के बन्धनों से जकड़ दिया गया, अदृश्य रस्सियों से बाँध दिया गया। एक कथानक है कि:-

कुछ व्यक्ति 100 ऊँट एक स्थान से दूसरे स्थान पर लेकर जा रहे थे। अपने गन्तव्य पर पहुँचने से पहले रात्रि का समय होने लगा तो उन्होंने सोचा कि कहीं रूकना पड़ेगा। इतने में उन्हें एक धर्मशाला नजर आई। उन्होंने धर्मशाला मांगी। धर्मशाला के मालिक ने कहा, आप यहाँ रात्रि विश्राम करें व अपने ऊँट बाहर बांध दें। जब वे ऊँट बाँधने लगे तो एक खूँटा व एक रस्सी कम पड़ गई। धर्मशाला मालिक से एक खूँटा व रस्सी मांगी उसने कहा मेरे पास खूँटा व रस्सी नहीं है। ऊँट वालों ने सोचा अब रात्रि को जागना पड़ेगा अन्यथा एक ऊँट भाग जाएगा। तब धर्मशाला के मालिक ने उपाय सुझाया कि आप इस ऊँट को बाँधने का नाटक करो जिससे इस ऊँट को लगे कि इसे बाँध दिया गया है। उन्होंने ऐसे ही किया। धरती पर 4-5 हथोड़े मारे जिससे लगा कि खूँटा गाड़ दिया है। फिर उन्होंने जैसे रस्सी बाँधते हैं ऐसे दो-चार बार हाथ घुमाया और ऊँट को बैठने का इशारा किया। ऊँट बैठ गया। प्रात: काल ऊँट उन्हें वहीं पर मिला। जब सारे ऊँट खोल कर खूँटे निकाल कर चलने लगे तो वह ऊँट ऊठा ही नहीं। वे धर्मशाला मालिक के पास गए और कहा कि आपने क्या जादू किया कि वह ऊँट जो रात को आपने बाँधा था, अब उसे खोलो तभी तो वह उठेगा। वे कहने लगे हमने तो उसे बांधा ही नहीं खोलें कैसे? धर्मशाला मालिक ने कहा जैसे हाथ घुमाकर बाँधा था वैसे ही खोलो। उन्होंने वैसे ही किया तो झट से ऊँट खड़ा हो गया।

हमारा भी कुछ ऐसा ही हाल है। हमें भी माता, पिता, समाज, पंडित, गुरुजन, द्वारा कुछ ऐसे बन्धनों से बाँध दिया गया है जो अदृश्य हैं। परन्तु यह अदृश्य बन्धन रस्सी तो क्या लोहे की जंजीरों से भी अधिक मजबूत हैं। हमारे मस्तिष्क में हजारों वर्षो से बिठा दिया गया है यदि ऐसा नहीं करोगे तो कुछ अनिष्ट हो जाएगा। यदि डरते-डरते कुछ ऐसा कर भी दिया, उन मान्यताओं के विपरीत तो अनिष्ट हो ही जाता है क्योंकि जो कार्य भयभीत मन से करेंगे वह ठीक हो ही नहीं सकता।

एक व्यक्ति एक महात्मा जी के पास गया और अनुरोध करने लगा कि मुझे परमात्मा को पाना है। मुझे कोई उपाय बताइए। महात्मा ने कहा कि यह कोई आसान कार्य नहीं है आप घर जाइए और सुखपूर्वक रहिए। वह व्यक्ति कहने लगा कि मुझे तो परमात्मा को पाने का उपाय बताइए। मै सब कष्ट सहने को तैयार हूँ। महात्मा ने कहा कि जंगल में जाओ और इस आसन पर बैठकर साधना करो, यह अभिमन्त्रित आसन है। पर किसी मनुष्य, पशु आदि से भय मत करना। वह जंगल में गया और उस आसन पर बैठ कर साधना करने लगा। कई जंगली जानवर आए, सिंह भी आया, चले गए। प्रारम्भ में उसे भय लगा, फिर धीरे-धीरे भयरहित होने लगा। उस व्यक्ति की बहुत प्रसिद्धि हो गई कि यह तो शेर, चीते आदि जंगली जानवरों से भी नहीं डरता। अब इस व्यक्ति के

पास एक शिष्य आया और प्रार्थना की कि मुझे ईश्वर को पाना है। पहला व्यक्ति कहता है कि किसी चीज से, पशु से डरना नहीं है। शिष्य कहता है नहीं डरूँगा। इतने में एक शेर दौड़ता हुआ नजर आ गया और गुर्राता हुआ चला गया। शिष्य की तो साँस थमने लगी। घबरा गया बुरी तरह गला रूँध गया। पानी माँगा पहला व्यक्ति पानी लेने जाने लगा और शिष्य उसके आसन की ओर बढ़ने लगा। यह देखकर पहला व्यक्ति घबराकर, भागकर अपने आसन की ओर लपका की कहीं यह आसन को न उठा ले अथवा मेरे आसन की शक्ति समाप्त न हो जाए। यह देख शिष्य हँसने लगा व कहता है कि आप तो मेरे से भी अधिक भयभीत हो। यह कहकर वह लौट गया। जो व्यक्ति शेर व जंगली जानवरों से नहीं डर रहा था वह भी अदृश्य बन्धन के भय से मुक्त नहीं था।

कुछ प्रत्यक्ष भय हैं जो स्वाभाविक है जैसे शेर, जंगली, जानवर, कुत्ता, गाय बैल के सींग आदि से डर। सड़क पर तेजी से आते ट्रक बस, कार से डर कर एक ओर हो जाना। इस प्रकार डरकर अपने आपको बचाना समझदारी है। दुष्ट व्यक्ति, दुष्ट संगत से बचकर रहना भी बुद्धिमानी हैं दूसरे परोक्ष भय है। जिनपर हमें विचार करना चाहिए, मनन करना चाहिए।

कुछ वस्तुओं में हम अपनी हानि मान लेते हैं व दुःखी होकर अपना आपा खो देते हैं। एक व्यक्ति ने कार ली। बहुत ध्यान रखता था कार का। बस भय था कि कार की कोई हानि न कर दे। एक दिन उसके लड़के ने कार पर किसी लोहे के टुकड़े से स्क्रैच मार दिए। अब इस व्यक्ति को इतना क्रोध आया कि लड़के को जोरदार चाँटा मारा और लड़का बेहोश हो गया। अब उसे कार की हानि भूल गई। वह तेजी से अपने बच्चे को डॉक्टर के पास ले गया और बोला कार कोठी सब ले लो पर मेरे लाल को ठीक कर दो। उसे अब बड़ी हानि का भय सता रहा था।

वैसा देखा जाए तो बड़ी हानि छोटी हानि कुछ नहीं है। सब हमारे विचारो पर निर्भर करता है। यदि प्रभु पर विश्वास है तो बड़ी से बड़ी हानि भी राई के दाने के समान लगती है। एक ही प्रकार की हानि या अवस्था में दो व्यक्ति बराबर दुःखी नहीं होते। एक अधिक और एक कम दुःखी होता है। यदि योगी है तो दुःखी होता ही नहीं है क्योंकि उसे किसी प्रकार का भय नहीं होता।

एक व्यक्ति चाय का प्याला लेकर खड़ा है। घर में बच्चे का व अन्य सदस्य का धक्का लगा और चाय उसके कपड़ों पर गिर गई। क्योंकि उसके प्याले में चाय थी इसलिए गिरी। हम सदैव क्रोध रूपी चाय अपने प्याले में लेकर घूमते हैं। यदि चाय ही न हो तो गिरेगी कैसे। हमारे प्याले में यदि प्रेम होगा तो प्रेम छलकेगा न कि क्रोध। हम प्रायः कहते हैं पत्नी, पति, बच्चे, पड़ोसी अथवा दूसरे लोग हमें क्रोध करवाते हैं। अरे भई प्याले में प्रेम रखो ना, क्रोध क्यों रखते हो। म. दयानन्द ने तो जहर देने वाले को भी पैसे देकर भाग जाने के लिए कहकर प्रेम ही तो दर्शाया था।

हम अदृश्य बन्धनों रस्सियों पर विचार करें चयन करें। वहम न पालें कि ग्रह हमारा कुछ बिगाड़ देंगे। बिल्ली के रास्ते काटने या किसी की छींक से, अथवा कांच का गिलास टूटने से कुछ अनिष्ट हो जाएगा। बेमतलब के चक्रों में पड़ कर भीरू न बनें। हाँ प्रत्यक्ष भय से अवश्य सावधान रहें व अपने को हानि से बचाएँ। क्रोध व भय न करते हुए श्रीकृष्ण जी द्वारा बताए हुए समत्व योग का पालन करें। जीवन में सम्मान रखते हुए सुखी रहें।

आर्य समाज, मॉडल टाउन, यमुना नगर, हरियाणा
मो. 9416446305

साधना के इच्छुक सम्पर्क करें

आत्म-शुद्धि-आश्रम' बहादुरगढ़ में आधुनिक ढंग से शौचालय, रसोई, स्नानगृह आदि से सुसज्जित कमरे साधक-साधिकाओं के लिए उपलब्ध हैं। यहाँ की विशेषता आश्रम में दोनों समय यज्ञ-उपदेशादि, पुस्तकालय, निकट अस्पताल व्यवस्था, एकान्त-शान्त वातावरण। आश्रम "दिल्ली के अन्दर- दिल्ली से बाहर"। रेल-बस एवं मेट्रो आदि की सुविधा। इच्छुक साधक- साधिकायें सम्पर्क करें।

—व्यवस्थापक, चलभाष: 9416054195

परिवार सुखी कैसे हो?

-डॉ. वेद प्रकाश

सुखी परिवार के विना सुखी मानव-जीवन की कल्पना करना केवल मूर्खता है। परिवार सुखी तभी हो सकता है, जब परिवार के सभी सदस्य (माता-पिता, पति-पत्नी और सन्तानें) परस्पर अपने कर्त्तव्यों का पालन करें। यहाँ परिवार के इन सभी सदस्यों के कर्त्तव्याकर्त्तव्य संक्षेप में प्रस्तुत हैं।

1. माता के कर्त्तव्याकर्त्तव्य-प्रत्येक परिवार में माता का नाम और स्थान सर्वोच्च है। माता ही सन्तान को जन्म देती और सहर्ष अनेक कष्ट सहनकर उसका पालन-पोषण करती है। माता-जैसी सहनशक्ति अन्य किसी में नहीं होती। माता सन्तानों की सर्वोत्तम गुरु और निर्मात्री होती है। अपनी सन्तान को स्वस्थ सुयोग्य और सदाचारी अथवा रोगी, अयोग्य दुराचारी बनाने में माता का सर्वाधिक हाथ रहता है।

माता का यह कर्तव्य है कि वह अपने सन्तानों को स्वस्थ सुयोग्य, सदाचारी, वीर देशभक्त और ईश्वरभक्त बनाए, अस्वस्थ अयोग्य, दुराचारी, कायर, देशद्रोही और नास्तिक नहीं। इसके लिए माता को सन्तानोत्पत्ति करने से पूर्व तथा बाद में भी स्वयं को स्वस्थ, सुयोग्य, सदाचारिणी और वीरांगना बनना होगा। यदि कोई माता स्वयं अस्वस्थ, अयोग्य दुराचारिणी और कायर है तो वह अपने सन्तानों को कभी भी श्रेष्ठ एवं सुखी नहीं बना सकती। अत: सन्तानों को सब भांति सुखी बनाना तथा उनके सभी कष्टों को मिटाना माता का परम धर्म है।

2. पिता के कर्त्तव्याकर्त्तव्य- पालन और रक्षण करने वाला ही पिता कहा जाता है। माता की भांति पिता को भी स्वस्थ, सुयोग्य, सदाचारी और परिश्रमी होना अनिवार्य है। ऐसा पिता ही श्रेष्ठ सन्तान को उत्पन्न एवं उसका श्रेष्ठ पालन कर सकता है। रोगी, अयोग्य, दुराचारी और कायर पिता कभी भी अपने सन्तानों को श्रेष्ठ नहीं बना सकता।

इसके अतिरिक्त पिता का कर्त्तव्य है कि वह अपने सन्तानों के पालन-पोषण के लिए सत्कर्मों से परिश्रमपूर्वक पर्याप्त धनोपार्जन करे, अपने सन्तानों से अत्यन्त प्रेमपूर्वक मधुर एवं निष्पक्ष व्यवहार करे, सन्तान को कोई भी नष्ट न होने दे, सन्तान को स्वस्थ सुयोग्य, सदाचारी, ईश्वरभक्त, वीर और देशभक्त बनाए। अत: अपने सन्तानों को सब भाँति सुख देना तथा उनके कष्टों को दूर करना पिता का परम धर्म है।

3. पति के कर्त्तव्याकर्त्तव्य-पति को स्वस्थ, सुयोग्य, सुन्दर, सदाचारी, सम्मानित और परिश्रमी होना चाहिए। ऐसा पति ही सब सुखों का भोग करता है। पति के लिए पत्नी-जैसा मित्र संसार में कोई नहीं होता। पति को चाहिए कि वह अपनी पत्नी को सदैव अपना सर्वोत्तम मित्र या साथी माने तथा उसका सदैव सम्मान करे। घर-बार कहीं भी पत्नी का अपमान न करे, क्योंकि पत्नी पति की देवी (सर्वस्व देनेवाली) है। पत्नी को कभी भी दासी नहीं समझना चाहिए। जो पति अस्वस्थ, अयोग्य, कुरूप, दुराचारी और आलसी होता है, उसकी पत्नी सदैव दु:खी रहती है। जिस घर में पत्नी का सम्मान होता है, वह घर सदैव प्रेम और हर्ष से भरपूर रहता है। पति अपनी पत्नी के स्वास्थ्य, सम्मान, सुख और सदाचार के विपरीत कभी कोई कार्य न करे। उसे चाहिए कि वह सदैव अपनी पत्नी को सब भांति सुख पहुँचानेवाले कार्य ही करे। परिवार के प्रत्येक कार्य में पत्नी की शुभ सहमति होनी चाहिए। पति अपनी पत्नी के माता-पिता, भाई-बहिन, आदि के साथ भी प्रेमपूर्वक व्यवहार करे।

4. पत्नी के कर्त्तव्याकर्त्तव्य- पत्नी के लिए पति ही उसका देवता (सर्वस्व देनेवाला) है। पति के समान दूसरा कोई मित्र, साथी या सम्बन्धी नहीं होता। पति ही पत्नी का तीर्थ है, क्योंकि वही तो पत्नी के सब दु:खों का नाश करता है। इसलिए पत्नी को सदैव अपने पति के कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए। पत्नी सदैव अपने पति का सम्मान करे। पत्नी को सदैव स्वस्थ, सुन्दर, सुयोग्य, गृहकार्यो में दक्ष और सदाचारिणी होना चाहिए। वह जब भी देखे तब उसकी आँखों से प्रेम बरसता हो। उसे सदैव मधु-जैसी

(शेष पृष्ठ 21 पर)

मुख्याधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी के जनमोत्सव की झलकियां

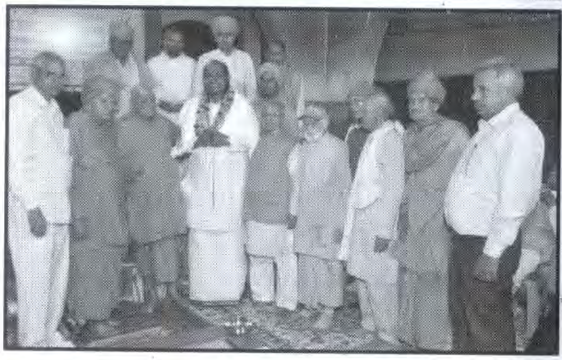

मुख्याधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी के जनमोत्सव की झलकियां

मुख्याधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी के जनमोत्सव की झलकियां

मुख्याधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी के जनमोत्सव की झलकियां

(पृष्ठ 16 का शेष)
मधुरवाणी बोलनेवाली तथा मन में सुन्दर विचारवाली होना चाहिए। पत्नी को पति के शुभ कर्मो को सफल बनाने में अपना पूर्ण सहयोग देना चाहिए।

पत्नी को अपनी पति के माता-पिता, भाई-बहिन तथा अन्य सम्बन्धियों के साथ सदैव प्रेमपूर्वक, धर्मानुसार और यथायोग्य व्यवहार करना चाहिए।

पत्नी को घर-परिवार की वृद्धाओं के साथ रहकर उनके अनुभवों से लाभ उठाना चाहिए।

पत्नी को पति की शुभ सहमति के बिना कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए। परिवार के सदस्यों के सामने निर्लज्जता प्रकट करनेवाले वस्त्रों को नहीं धारण करना चाहिए।

पत्नी को छोटी-छोटी बातों को बढ़ाकर लड़ाई झगड़ा नहीं करना चाहिए, व्यर्थ बोलना और व्यर्थ रोना नहीं चाहिए, सदैव स्वस्थ, स्वच्छ और सुन्दर रहना चाहिए तथा अपने कुल-परिवार की श्रेष्ठ परम्पराओं का पालन करके कुल-परिवार का यश बढ़ाना चाहिए। पत्नी परिवार के किसी भी सदस्य के प्रति अपने मन में ईर्ष्या और पक्षपात का भाव न रखे, विभिन्न ऋतुओं के अनुकूल भोजन, वस्त्र, आदि की समय से व्यवस्था करे, दुराचारी एवं दुर्गुणी स्त्री-पुरुषों से सम्बन्ध न रखे तथा धन्य-व्यय करने में सदैव मितव्ययी बनी रहे।

5. सन्तानों के कर्त्तव्याकर्त्तव्य-सन्तान परिवार की शोभा है। बालक ही बड़े होकर घर के उत्तराधिकारी बनते हैं। जिस प्रकार सन्तान का पालन-पोषण करना माता-पिता का धर्म है, उसी प्रकार माता-पिता की सेवा करना सन्तानों का धर्म है। जो सन्तान अपने माता-पिता और उनके भी माता-पिता की तन-मन-धन से यथोचित सेवा और सम्मान करते हैं, वे ही पुत्र और पुत्री कहाते हैं।

पुत्र-पुत्री को माता-पिता के शुभ गुणों और शुभकर्मों का अनुकरण करना चाहिए। यह ध्यान रहे कि माता-पिता में जो भी दुर्गुण हों या वे जो भी दुष्कर्म करते हों तो सन्तानों को वे दुर्गुण और दुष्कर्म कभी भी स्वीकार नहीं करना चाहिए।

पुत्रों और पुत्रियों दोनों को ही स्वस्थ, सुन्दर, सुयोग्य, सदाचारी और सम्मानित बनाना चाहिए, अपने कुल की श्रेष्ठ परम्पराओं को आगे बढ़ाना चाहिए तथा कुरीति, पाखण्ड और अन्धविश्वास का सदैव त्याग करना चाहिए।

सन्तान कभी भी माता-पिता का अपमान न करे, उन्हें किसी प्रकार का कष्ट कभी न दें और उनके किये शुभ कर्मो को समाप्त न करें। इसके साथ ही दुर्गुण, दुर्जन दुर्व्यसन और दुराचार को त्यागकर सद्गुण, सज्जन, सत्कर्म और सदाचार को ही अपनाएँ।

6. भाई-बहिन के कर्त्तव्यार्त्तव्य-मानव-संसार में भाई-बहिन का सम्बन्ध सबसे अधिक पवित्र है, क्योंकि दोनों का परस्पर कोई स्वार्थ नहीं होता। इस शुभ एवं पवित्र सम्बन्ध की रक्षा के लिए भाई का यह परम धर्म है कि बहिन की सदैव सेवा-सहायता और रक्षा करे। बहिन का अपमान कभी न करे और अन्य किसी को भी अपनी बहिन का अपमान न करने दे। इसी प्रकार बहिन भी सदैव भाई की कल्याण-कामना करने वाली तथा उसके सुख-दुःख में काम आनेवाली हो। भाई-बहिन दोनों के मन में स्वार्थ का नाम भी नहीं होना चाहिए। दोनों के मन में सदैव निर्मल प्रेम और शुभ-संकल्प ही रहने चाहिए।

इस प्रकार यदि परिवार के सभी सदस्य परस्पर प्रेम, सद्भाव और सदाचारपूर्वक रहें तो सभी परिवार सब भाँति सुखी रहेंगे। परिवार में सबके साथ न्यायपूर्वक व्यवहार होना चाहिए तथा सबके सुख-दुःख का सबको ध्यान रखना और उसे दूर करने का यथासम्भव प्रयास करना चाहिए।

परिवार मानव-समाज की सबसे महत्त्वपूर्ण एवं अनिवार्य इकाई है। यदि सभी लोग स्वार्थ त्यागकर अपने-अपने परिवारों को सुखी, सदाचारी, ईश्वरभक्त और देशप्रेमी बना लें तो सर्वत्र सुख-ही-सुख दिखाई देगा। इस संसार को सुखी बनाने का यही एकमात्र सर्वोत्तम उपाय है।

❑ आत्मबोध मानव जीवन को आन्तरिक रूप से ही नहीं अपितु बाह्य रूप से भी सौन्दर्यपूर्ण बनाता है और मानव जीवन का अन्तिम गौरव प्रकट होता है। - **विक्रम देव आर्य**

तुलसी

-रागिनी चतुर्वेदी

हमारे भारतीय समाज में तुलसी का पौधा एक पूज्यनीय पौधा माना जाता है चाहें उत्तर दिशा के वासी है। चाहे दक्षिण दिशा के चाहे पूर्व और पश्चिम दिशा के वासी, तुलसी की पूजा किसी ने किसी रूप में सभी करते हैं, घर में तुलसी का पौधा लगाते हैं।

एक बार मैं गोवा गयी थी, वहां अधिकांश घरों के सामने रंग-बिरंगे गमलों में तुलसी के पौधे लगे दिखाई दिये।

वास्तव में हमारे पूर्वजों की बौद्धिक क्षमता सर्वोच्चर शिखर तक पहुँची हुयी थी। उनके द्वारा विरासत में मिली सभी परम्परायें, चाहें वे सामाजिक रूप में हैं। व्यक्तिगत रूप में या आध्यात्मिक रूप में हों, वैज्ञानिक के सूक्ष्म तत्वों पर आधारित हैं।

प्राणीमात्र का जीवन प्राकृतिक तत्वों से निर्मित है और प्रकृति पर ही उसका जीवन-अस्तित्व निर्भर है। तुलसी का पौधा भी प्रकृति की अमूल्य देन है। मानव जीवन में उसकी बहुत अधिक उपयोगिता है। हमारे पूर्वजों ने इसी कारण तुलसी के पौधे से सम्बन्धित अनेक परम्परायें जोड़ दी थी।

जो व्यक्ति जिस भावनाओं से प्रभावित होगा उसी भावना से वह तुलसी के पौधे के सम्पर्क मैं अवश्य आयेगा और पौधे से मिलने वाले लाभों से प्रभावित होगा।

कहते हैं जिस घर में तुलसी का पौधा फलता फूलता है उस घर में धन-धान्य और सुख-शान्ति रहती है। अतः धन-वैभव के इच्छुक इसी भावना से तुलसी के पौधे के सम्पर्क में रहते हैं।

तुलसी के पौधे पर नियमित रूप से जल चढ़ाना व सायं दीपक जलाना एक धार्मिक कृत्य माना जाता है। तुलसी को योगीराज कृष्ण की भक्त प्रेमिका के रूप में भी स्वीकारा गया है। और कार्तिक मास में उपयुक्त जल वायु के अनुसार तुलसी का पौधा पूर्ण विकास पर होता है, पूरे मास उसकी नियमित पूजा की जाती है और सर्दियों की शुरुआत होती है। अतः कृष्ण की मूर्ति से तुलसी का विवाह का उस पर लाल चुन्नी उढ़ा देते हैं। सर्दी से पौधे की रक्षा हो जाती है।

आध्यात्मिक व धार्मिक भावनावश ही लोग उसके सम्पर्क में रहते हैं।

तुलसी का पत्ता शारीरिक स्वस्थता के लिए भी बहुत उपयोग है। तुलसी के पत्ता खाने से पेट सम्बन्धी अनेक रोगों में लाभ होता है। इसीलिए परम्परा है भगवान का भोग लगाते समय खाद्य पदार्थो में तुलसीदास डाला जाता है ताकि खाद्य पदार्थ के साथ तुलसी का पत्ता शरीर में जायेगा।

तुलसी पत्र में अनेक कीटनाशक तत्व होते हैं। ग्रहण के समय भी जो भी खाद्य पदार्थ घर में होते हैं। उसमें तुलसी पत्र डालने की परम्परा है।

पशु-पक्षी अपना उपचार स्वयं प्राकृतिक साधनों से कर लेते हैं। वे अलग-अलग रोगों के लिए अलग प्रकार की मिट्टी या पत्ते खाकर अपना उपचार कर लेते हैं।

मैंने स्वयं देखा कि एक बिल्ली ने गैदें के पौधे की मिट्टी कई बार खाकर अपने को रोग मुक्त कर लिया।

यह मेरा व्यक्तित्व अनुभव है कि प्रातः निहार मुँह तुलसी के दो पत्ते नियमित रूप से चबा-चबा कर खाने से गैस की शिकायत, एसीडिटी की, लिवर बढ़ने की और कब्ज जैसी अनेक बीमारियों का निवारण हो जाता है। आज यह रोग बहुत प्रचलित, सामान्य रोग बन गये हैं।

इसीलिए तुलसी का पौधा हर घर में अवश्य लगाना चाहिए और उसकी नियमित देखभाल करनी चाहिए शारीरिक मानसिक लाभ के लिए धार्मिक भावना के लिए अवश्य लगाये और लाभ उठाइये।

कार्य कठिन नहीं होता, कमजोर सोच होती है

-सीताराम गुप्ता

हम प्रायः कहते हैं कि सोचना जितना आसान है कार्य करना उतना ही कठिन है। ऊपरी तौर पर यह बात ठीक लगती है लेकिन सोचना भी उतना आसान नहीं जितना ऊपर से लगता है। कार्य करना कठिन है तो सोचना भी कम कठिन नहीं। हाँ, कार्य करना थोड़ा कठिन हो सकता है। प्रश्न उठता है कि जो कार्य हम करते हैं वह क्यों होता है? कर्म की उत्पत्ति का क्या कारण होता है? कार्य कारण सिद्धांत के अनुसार हर क्रिया का कोई कारण अवश्य होता है। हर कार्य के पीछे एक कारण होता है और सबसे प्रमुख कारण हमारी सोच ही होती है। बिना मन में विचार किए या आए कोई भी कार्य प्रारंभ करना संभव नहीं। जब मन में विचार आता है तभी कार्य की रूपरेखा बनती है। जैसी रूपरेखा वैसा कार्य। जब मन में किसी बड़े कार्य की रूपरेखा बनती है तो बड़ा कार्य सम्पन्न होता है और जब किसी महत्त्वहीन कार्य की रूपरेखा बनती है तो महत्त्वहीन कार्य सम्पन्न होता है। जब हमारा चिंतन सार्थक व उपयोगी होता है तो उसके परिणामरूपरूप जो सृजन होता है वह भी सार्थक व उपयोगी ही होता है।

वैसे हम दिन भर सोचते ही तो रहते हैं। कभी कुछ तो कभी कुछ। कभी सायास तो कभी अनायास और जिसके पास कुछ काम नहीं होता वो सोचते रहने के सिवा करें भी तो क्या करें? बड़ा आसान है इस प्रकार का सोचना, लेकिन क्या ऐसे सोचने से कुछ लाभ मिलता है? यदि हम जीवन में कुछ करना चाहते हैं और अच्छा करना चाहते हैं तो हमें अपनी सोच को उसी के अनुरूप अच्छा बनाना होगा। कोई भी कार्य हमें कठिन लगता है अथवा उसमें सफलता नहीं मिलती तो इसका सीधा सा अर्थ है कि हमारी सोच ही उस कार्य के अनुरूप नहीं है। कार्य कभी कठिन नहीं होता हमारी सोच में कमी होती है। जब तक हमारी सोच में स्पष्टता, सकारात्मकता व सार्थकता के साथ दृढ़ निश्चय नहीं होगा, हम जीवन में पूरी तरह से सफल नहीं हो सकते क्योंकि सही सोच के अभाव में हमें कार्य कठिन प्रतीत होते रहेंगे। जीवन में प्रसन्नता व सफलता पाने के लिए सही सोच का विकास करना अनिवार्य है।

हममें से अधिकांश लोग एक निश्चित अथवा पूर्व निर्धारित सीमित दायरे में रहकर सोचने के आदि होते हैं। हमारी सोच की एक सीमा होती है जिसे दुर्भाग्यवश जाने-अनजाने में हम स्वयं ही निर्धारित कर लेते हैं। हमारा परिवेश भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यही सोच हमें बहुत आगे बढ़ने से रोके रखती है। वास्तविकता यह है कि मनुष्य जो सोच ले वही कर सकता है। न सफलता अथवा कार्य की कोई सीमा होती है और न सोच की। कार्य को सरल बनाने, बड़े-बड़े कार्य करने व सार्थक, सकारात्मक एवं उपयोगी कार्य करने के लिए हमें उसी तरह की सोच विकसित करनी होगी। सोच ही व्यक्ति को प्रगतिशील बनाने में सक्षम है तो सोच के कारण ही व्यक्ति जीवनभर पुरातनपंथी बना रहता है। बिना सोच बदले कठिन कार्य करना तो दूर हम नए फैशन के कपड़े भी नहीं पहन सकते। सोच को बदलना आसान नहीं लेकिन असंभव बिल्कुल नहीं। हम प्रयास करके अपनी सोच को बदलकर बेहतर बना सकते हैं और बेहतर सोच से बेहतर जीवन बना सकते हैं। क्या यह कम महत्वपूर्ण है?

सोच को बेहतर बनाने के लिए हमें अपने सोचने के तरीके में बदलाव करना चाहिए। जब भी मन में कोई विचार उठता है तो उसका ध्यानपूर्वक अवलोकन/विश्लेषण करना चाहिए। क्या यह विचार और इससे उत्पन्न कर्म मेरे लिए ठीक होगा? क्या यह समाज व राष्ट्र के हित में होगा? यदि हम ऐसा कर पाते हैं तो न तो हम कोई गलत कार्य ही करेंगे और न कोई कार्य कठिन ही रहेगा। लेकिन क्या यह इतना सरल है? बहुत कठिन है गलत सोच को बदलना और सही सोचना। लेकिन असंभव नहीं। अभ्यास से सब कुछ संभव है। सब कुछ सरल बन जाता है। मन में विश्वास उत्पन्न करना पड़ता है कि मैं हर कार्य कर सकता हूँ। ऊँचे लक्ष्य निर्धारित करने की योग्यता व क्षमता का विकास करना पड़ता है। यह कार्य तो बहुत

बड़ा है, मुझसे नहीं हो पाएगा-इस प्रकार की निराशाजनक सोच व संशय से मुक्त होना पड़ता है। जब हम अपने मन को यह विश्वास दिला देते हैं कि दुनिया का कोई भी कार्य यदि कोई भी व्यक्ति कर सकता है तो मैं भी अवश्य कर सकता हूँ और करके ही दम लूंगा तो कोई भी कार्य कठिन नहीं रह जाता।

कुछ लोग सामान खरीदने के लिए जब बाजार जाते हैं तो एक निश्चित राशि ही लेकर जाते हैं। यदि उस सामान की कीमत बढ़ जाती है तो वे वापस लौट आते हैं। खरीददारी उनके लिए संभव नहीं हो पाती। संकुचित बजट हो या संकुचित सोच, दोनों के परिणाम निराशाजनक ही होते हैं। जिस प्रकार मुफ्त कुछ नहीं मिलता अथवा कम पैसों में अच्छा सामान नहीं मिलता, उसी प्रकार निरंतर प्रवहमान मुफ्त बराबर आसान अथवा सामान्य सोच से भी बड़ी उपलब्धि संभव नहीं। धन से अमीर व्यक्ति ही महंगी चीजें खरीद पाता है और सोच से अमीर व्यक्ति ही हर प्रकार की सफलता प्राप्त कर पाता है। पारंपरिक कमजोर सोच को बदल कर नया इतिहास रच डालिए।

जीवन में मनचाही सफलता के लिए जैसी सोच चाहिए वह कठिन अवश्य है लेकिन असंभव नहीं। जब हम ये कहते हैं कि यह कार्य तो हम बिल्कुल नहीं कर सकते तो आसान होने पर भी वह कार्य नहीं किया जा सकता। हमारी सोच के कारण वह कार्य मुश्किल लगता है वरना दुनिया में जो कार्य कोई भी एक व्यक्ति कर सकता है अन्य लोग या हम क्यों नहीं कर सकते?

नेपोलियन एक कम पढ़ा-लिखा व्यक्ति था, लेकिन वह एक प्रेरक वक्ता व लेखक बनना चाहता था। उसकी भाषा एक अच्छा लेखक बनने लायक नहीं थी, लेकिन उसने दृढ़ निश्चय कर लिया कि लेखक ही बनना है। यह असंभव सा फैसला था। उसने असंभव शब्द को ही शब्दकोष से काटकर फेंक दिया और फिर अपने मन से उसे मिटा दिया। नेपोलियन हिल की प्रेरक वक्ता एवं लेखक बनने की सोच एवं दृढ़ संकल्प ने ही उसे दुनिया का सफलतम प्रेरक वक्ता एवं लेखक बना दिया। इसमें संदेह नहीं। जो लोग यह कहते हैं कि इस कार्य को तो मैं करके ही रहूँगा, वे हर हाल में उस कार्य को कर लेते हैं चाहे वह कितना भी कठिन क्यों न हो। यह सोच का ही परिणाम होता है कि कुछ लोग असंभव से कार्यों को भी करने में सफल हो जाते हैं। हर नया काम, हर नई खोज अथवा हर नया रिकार्ड-बड़ी सोच का ही परिणाम होता है।

हंसो और हंसाओ

- रवि शास्त्री, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़

- **टीचर**-दुर्भाय और दुर्दशा में क्या फर्क है।
  स्टूडेंट-सर स्कूल में आग लग जाये तो स्कूल की हालत खराब हो जायेगी इसे कहते हैं "दुर्दशा" और आग लगने पर भी जिंदा बच गये तो ये होगा हमारा दुर्भाग्य।
- **पापा-बेटा!** लड़की वाले देखने आ रहे हैं। उनके सामने लंबी-लंबी बाते करना।
  लड़की वालों के आते ही।
  बेटा-पापा जरा चाबी देना हमारा जहाज धूप में खड़ा है अंदर कर देता हूँ।
- **बॉस**-वाह नयी शर्ट......।
  नरेश-नही सर भैया ने गिफ्ट दी है।
  बॉस-ओ अच्छा मुझे लगा कही मैं सैलरी ज्यादा तो नहीं दे रहा।
- **संता** का **बीवी** से झगड़ा हो गया और बीवी से परेशान हो गया और अपने **बेटे** से बोला-बेटा कभी शादी मत करना ये मुसीबत कर देती है।
  बेटा-ठीक है पापा खुद भी नहीं करूंगा और अपने बच्चों को भी नहीं करने दूंगा।
- **लड़का लड़की** से क्या तुम्हें वट्सअप चलाना आता है।
  लड़की-नहीं-मैं पीछे बैठ जाऊंगी तुम तेज चलाना।

ऋषि के गुणों को याद करो

- ऋषिराम कुमार, 112, सैक्टर-5, पार्ट-3,
गुड़गांव (हरियाणा)-122001,
मो. 9968460312

दयानन्द ने घर-घर में गायत्री का मन्त्र पहुंचाया था,
वेद है हमारी असली पूंजी सबको यह बतलाया था,
पांखण्डियों के चक्कर में लोगों का मन भरमाया था,
ऋषि ने आकर सब लोगों को, सही रास्ता बतलाया था।

बाल-विवाह है एक बुराई, सबको यह बतलाया था,
नारी की शिक्षा को भी बहुत जरूरी बतलाया था,
विरोधियों ने ऋषि को बहुत बदनाम कराया था,
ऋषि किसी के भी आगे, बिल्कुल नहीं घबराया था,

टंकारा का नाम सारी दुनिया में चमकाया था,
दुश्मनों ने मिलकर ऋषि को जहर दिलवाया था,
परोपकार में ऋषि ने अपना पूरा जीवन लगाया था,
सच्चाई का रास्ता सारी दुनिया को बतलाया था।

वेदों के ज्ञान का एक सपना मन में सजाया था,
धर्म के काम में ऋषि ने अपना सारा जीवन लगाया था,
संसार की भलाई के लिए फिर आर्य समाज बनाया था,
पाखण्ड खन्डिनी पाताका को हरिद्वार में लगवाया था।

अर्धमियों ने सारे जग में अधर्म को फैलाया था,
भोली-भाली जनता को सबने मूर्ख बनाया था,
ऋषि ने आकर के भारत को नये युग में पहुंचाया था,
आओ ऋषि के गुणों को याद करे जिसने यह देश बनाया था।

अनमोल वचन

- जीवन बहुमूल्य है इसका विवेक पूर्वक उपयोग ही मानव मात्र के लिए हितकारी है। अन्यथा यह कम भयावह नहीं।
- एकाग्रता से ही सम्पूर्ण आनन्द प्राप्त हो सकता है।

परनिन्दा से बचो

संकलन-आदित्य प्रताप सिंह, तिलहर

कहा जाता है कि प्रजापति ब्रह्मा इस सृष्टि के कर्ता हैं। किन्तु मनुष्य को उन्होंने विचित्र प्राणी के रूप में देखा और एक बार अपने पास बुलाकर पूछा, "बोलो, तुम क्या चाहते हो?"

"मैं उन्नति करना चाहता हूँ, सुख-शान्ति चाहता हूं, और चाहता हूं कि सबं लोग मेरी प्रशंसा ही करें। ब्रह्मा जी ने मनुष्य के सम्मुख दो थैले रख दिये। कहा, "इन थैलों को ले लो। इनमें से एक थैले में तुम्हारे पड़ोसी की बुराइयां भरीपड़ी हैं, उसे पीठ पर लाद लो और उसे सदा बंद ही रखना। न तुम स्वयं देखना और न किसी दूसरे को देखने देना। "ये जो दूसरा थैला है, इसमें तुम्हारे दोष भरे पड़े हैं। उसे सामने लटका लो और बार-बार खोल कर नित्यप्रति देख लिया करो। दूसरे देखना चाहें तो उनको भी दिखा देना।"

मनुष्य ने दोनों थैले उठा लिए। किन्तु वहीं पर उससे एक भूल हो गयी। उसने अपनी बुराइयों का थैला तो पीठ पर लाद लिया और उसका मुंह बन्द कर दिया। अपने पड़ोसी की बुराइयों से भरा थैला उसने सामने लटका लिया। उसका मुंह खोल कर वह उसे नियमित रूप से देखता रहता है और दूसरों को भी दिखाता रहता इससे उसने जो वरदान मांगे थे वे भी उल्टे हो गये। वह अवन्नति करने लगा। उसे दुःख और अशान्ति मिलने लगी। सब लोग उसको बुरा बताने लगे और उसकी बुराइयां भी करने लगे। उसका जीवन संकटमय हो गया।

मनुष्य यदि उन्नति करना चाहे तो आज वह मनुष्य की उस भूल को सुधार ले, उसकी उन्नति हो सकती है। उसको सुख-शान्ति मिलेगी। संसार में वह प्रशंसा का पात्र बन सकता है।

मनुष्य को केवल करना यह है कि अपने पड़ोसी और परिचितों के दोष देखना बन्द कर और अपने दोषों पर सदा दृष्टि रखे।

तन्त्र-मन्त्र का पाखण्ड

– डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

आज जैसा कि एक अकेला आर्य समाज अन्धविश्वास व पाखण्डों के विरूद्ध आवाज उठा रहा है। उधर सहस्रों ऐसे गुरु उत्पन्न हो गये हैं तो तांत्रिक कर्म, फलित ज्योतिष व पाखण्डों को बढ़ावा दे रहे हैं जिससे समाज अवनति की ओर अग्रसर हो रहा है।

किसी कॉलोनी, ग्राम या नगर में वर्ष में एक बार वेद प्रचार कार्यक्रम होता है तो उसके विरूद्ध वहां वर्ष में सैकड़ों कार्यक्रम देवी जागरण व गुरुडमवादियों के हो जाते हैं। अनेक घरों में गुरुओं के पैरों के निशान वाली तस्वीर, गुरुओं के खड़ाऊँ की छाप। गुरुओं के भांति-भांति आकार प्रकार की चित्रकारी के बड़े-बड़े चित्र टंगे मिल जाएंगे।

उधर तांत्रिकों का कार्य तीव्र स्तर पर चल रहा है। ताँत्रिक रात्रि को शमशानों, नदियों के तट पर जा कर विभिन्न प्रकार के क्रियाकर्म करते हैं। श्मशान की राख अपनी देह पर लगाते व वहाँ से अस्थियाँ उठाकर एक तार में पिरों कर अपने गले में लटका लेते हैं, बाँहों पर सिर में छोटी-छोटी अस्थियों की माला बाँध लेते हैं तथा श्मशानों आदि से अस्थियाँ उठाकर अपने निवास पर सजा कर रखते हैं तथा जन सामान्य में प्रचार करते हैं ऐसा कोई कार्य नहीं जो ताँत्रिकों के यहाँ न होता हो। समस्त बाधाओं को दूर करने का आश्वासन यहाँ दिया जाता है। समस्त कार्यों को पूरा करने का विश्वास यहाँ दिलाया जाता है। अनपढ़, मूर्ख, पिछड़े हुए लोग यहाँ आते हैं भीड़ लगी रहती है। यही नहीं भारत में तो अनेक पढ़े लिखे डिग्रीधारी भी इस पाखण्ड जाल में फँस कर वहाँ ऐसे ताँत्रिकों की शरण में पहुँच जाते हैं। ताँत्रिकों का कार्य एक अँधविश्वास है। न किसी कार्य की इससे सिद्धि होती है न कोई कार्य पूर्ण होता है परन्तु जो अँधविश्वासी है वही यहाँ पहुँच जाते हैं। ताँत्रिक लोग संतान होने का दावा करते हैं। जो महिलाएं संतानहीन हैं उन्हें बहकाते हैं तथा संतान के लिए बच्चों को उठाकर बलि तक दिलवा देते हैं। जो कि घृणास्पद, अमानवीय कुकृत्य है, पाप कर्म है। जब किसी का कोई बच्चा खो जाता है तो सर्वप्रथम ताँत्रिकों की करतूत की ओर ही सम्भावना की जाती है, तत्पश्चात् अपहरण व आपसी शत्रुता की सम्भावना होती है।

लोगों को घर बनने, नौकरी लगने, सास का बहू पर वशीकरण, व बहू का सास पर वशीकरण का दावा करने हेतु गंडा, ताबीज, धागा, बाँधने को देते हैं तथा बोतल में पानी भर कर देते हैं और कहते हैं कि मन्त्र फूँक कर या पढ़ कर पानी दिया है इसमें से थोड़ा-थोड़ा जिसे पिलाओगे वह तुम्हारे वश में हो जाएगा। हालांकि इस पानी में कोई मन्त्र आदि नहीं होता अपितु कोई हानिकारक विषाक्त द्रव्य अवश्य मिला होता है जिसे यह पानी पिलाया जाता है उसकी सोचने समझने की शक्ति (विवेक) धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है। अब पत्नी पति को पिलाए या सास बहू को वह उसकी सत्य-असत्य सब बातों को मानने लगता है।

ग्रहबाधा बताकर भयभीत कर देते हैं और शनि, बृहस्पति ग्रह, सिर पर आने की बात कहते हैं, भूत-प्रेत आने की बात कहते हैं, किसी का भी नाम लेकर बताते हैं कि तुम वहाँ कब्र के पास से निकले थे तब वहाँ से फलाँ व्यक्ति की हवा तुम पर आ गयी। पहले काल सर्प दोष का भय दिखाते हैं फिर उसको उतारने के लिए धन खींचते हैं।

मानसिक रूप से विक्षिप्तों का तो और भी बुरा हाल है। उनपर भूत-प्रेत, बयार, हवा, पिशाच बताकर उन्हें मारते-पीटते, चीखते-चिल्लाते उनसे कुछ का कुछ कहलाते कभी नचाते, भाँति-भाँति की डरावनी आवाजें उनसे निकलवाते हैं ऐसे रोगी जिनका मानसिक संतुलन ही ठीक नहीं कुछ भी उनके प्रश्नों के आगे बोलते रहते हैं।

ताँत्रिकों के पास कोई भी रोगी जाय तो उस पर ऊपर या चक्कर ही बताते हैं और तरह-तरह की गूगल, लौंक, अगर-तगर आदि को जला धूँआ कर उसके नाक के आगे बार-बार झटके से करते हैं जिससे रोगी बार-बार झटके से करते हैं जिससे रोगी का श्वास भी घटने लगता है आँखों में अश्रु तक आ जाते हैं स्थिति और विकृत हो जाती है।

भारत भर में ताँत्रिकों की भरमार है और इनसे मूर्ख व भोली जनता को शारीरिक एवं आर्थिक रूप से अत्यधिक क्षति उठानी पड़ती है कभी-कभी तो प्राण भी चले जाते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने इन अँधविश्वासों व पाखण्डों की पोल खोली व जनता को समझाया कि यह ताँत्रिक कर्म व फलित ज्योतिष, मारण, उच्चाटन, वशीकरण यह सब दुष्कर्म हैं अँधविश्वास हैं मूर्खो के कार्य हैं। ग्रहों के विषय है जैसा कि ताँत्रिक कहते हैं कि शनि, सूर्य आदि क्रूर ग्रह किसी पर बताते हैं तो इसके लिए बताया है कि ''जैसी यह पृथिवी जड़ है वैसे ही सूर्यादि लोक हैं, वे ताप व प्रकाश आदि से भिन्न कुछ भी नहीं कर सकते।'' -स.प्र. द्वितीय समु.।

डोरा ताबीज मन्त्र पढ़कर जीवन बचाने को कहने वाले ताँत्रिकों के लिए कहा है-

''क्या तुम मृत्यु, परमेश्वर के नियम और कर्मफल से भी बचा सकोगे! तुम्हारे इस प्रकार करने से भी कितने ही लड़के मर जाते हैं और तुम्हारे घर में भी मर जाते हैं और क्या तुम मरने से बच सकोगे?- स.प्र. द्वितीय समु.

ताँत्रिकों के विरूद्ध आर्यो को अभियान चलाना चाहिए हालाँकि बलिप्रथा, सतीप्रथा के प्रति कानून बन गया परन्तु जो बलि चढ़वाने, कराने वाले हैं वह ताँत्रिक ही हैं जो आज भी बच्चों आदि की बलि यदा कदा कराते पकड़े जाते हैं। यह सामाजिक दुष्कर्म है, पाप है। इसके मूल में ग्राम, नगर महानगरों में स्थान-स्थान पर जनता का मूर्ख बनाते वहीं ताँत्रिक हैं जो जनता के भोले अनपढ़ लोगों को मूर्ख बना चालाकी से धन ऐंठते व अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं, चमत्कार दिखाकर जनता को ठगते हैं। आज भी तांत्रिकों के अनेक मठ मन्दिर हैं। मेलों में भी यह धूनी लगाकर बैठे मिल जाते हैं जनता को झाड़ फूँक में फंसाते फिरते हैं।

गली न. 2, चन्द्रलोक कॉलोनी,
खुरजा-203131 (उत्तर प्रदेश)

धूप अगरबत्ती एवं गायत्री महिमा हवन सामग्री

ऋतु अनुकूल

उत्तम प्रकार की जड़ी-बूटियाँ द्वारा संस्कार विधि के अनुसार
केवल उपकार की भावना से लागत-मात्र मूल्यों पर उपलब्ध

विशिष्ट	35.00	रु. प्रति किलो
उत्तम	45.00	रु. प्रति किलो
विशेष	55.00	रु. प्रति किलो
डीलक्स	75.00	रु. प्रति किलो
सर्वोत्तम	130.00	रु. प्रति किला
सुपर डीलक्स	300.00	रु. प्रति किलो

इसके अतिरिक्त अध्यात्म सुधा विधि के अनुसार हर प्रकार की हवन सामग्री आर्डर पर तैयार की जाती है।

निर्माता :

मै. लाजपतराय सामग्री स्टोर

856, कुतुब रोड, दिल्ली-110006

फोन : दुकान-23535602, 23612460, फैक्ट्री-32919010, निवास-25136872

आत्म शुद्धि पथ के संरक्षक सदस्य

1. श्री विक्रमसिंह जी ठाकुर, दिल्ली
2. श्रीमती इन्दुपुरी जे.के. मेमोरियल ट्रस्ट मोगा, पंजाब
3. चौ. नफेसिंह जी राठी पूर्व विधायक क्षेत्र बहादुरगढ़, हरि.
4. श्री वीरसेन जी मुखी कीर्तिनगर, दिल्ली
5. श्री बलजीत सिंह जी उपाध्यक्ष किसान मोर्चा भाजपा दिल्ली प्रदेश, नजफगढ़
6. आचार्य यशपाल जी कन्या गुरुकुल खरखोदा, हरि.
7. श्री हरि सिंह जी सैनी, प्रधान आर्य समाज, हिसार
8. पंडित राम दर्शन शर्मा, महावीर पार्क, बहादुरगढ़
9. श्री सत्यपाल जी वत्स काष्ठ मण्डी, बहादुरगढ़
10. श्री जयकिशन जी गहलौत, नजफगढ़, दिल्ली
11. श्री रमेश कुमार राठी, ७ विश्वा, जटवाड़ा मो. बहादुरगढ़
12. श्रीमती नीतू गर्ग, ईशान इंस्टीट्यूट, ग्रेटर नोएडा
13. श्री रामवीर जी आर्य, सै. ६, बहादुरगढ़
14. श्री जितेन्द्र कुमार जी आर्य, सूरत, गुजरात
15. श्री राव हरिशचन्द्र जी आर्य, नागपुर
16. श्री ओम्प्रकाश आर्य, आर्यसमाज कीर्तिनगर, नई दिल्ली
17. श्री देव प्रकाश जी पाहवा, राजौरी गार्डन, दिल्ली
18. श्री जयदेव जी हसीजा 'प्रेमी' वानप्रस्थी, गुड़गांव
19. स्वामी वेदरक्षानन्द जी सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा
20. रविन्द्र कुमार आर्य-सैक्टर ६, बहादुरगढ़
21. नेहा भटनागर, सुपुत्र सुरेश भटनागर, तिलकनगर, फिरोजाबाद
22. अमित कौशिक, सु. श्री महावरी कौशिक, मलिक कॉलोनी, सोनीपत
23. सरस्वती सुपुत्र वे.के. ठाकुर, न्यू सिया लाईन लखनऊ (उ.प्र.)
24. दीपक कुमार, सुपुत्र श्री भगवान् गिरि, बोकारो, झारखण्ड
25. कृष्णा दियोरी भरेली, सु. श्री शैलेन्द्र नाथ दियोरी, गोहाटी, असम
26. रवि कुमार जायसवाल, सुपुत्र श्री आर.एस. जायसवाल, गोपालगंज, बिहार
27. श्री सुरेश कौशिक, मॉडल टाउन, बहादुरगढ़
28. श्री गौरव, सु. श्री कामेश्वर प्रसाद, हनुमान नगर, कंकड़बाग, पटना
29. श्री परमजीत सिंह, सुपुत्र सरदार गुरनाम सिंह, दसुआ (पंजाब)
30. श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंघल, शक्ति विहार, दिल्ली
31. श्री प्रेम कुमार जी गर्ग, दनकौर (उ.प्र.)
32. श्री ओमप्रकाश जी अग्रवाल, ईसान इन्स्टीट्यूट, नोएडा
33. कु. शिखा सिंह, सु. श्री सीपीसिंह, सुभाष नगर, हरदोई उ.प्र
34. कु. नेहाराज, सु. श्री राजन कुमार, बाकरंगंज पटना (बिहार)
35. कु. गितिका, सु. श्री प्रमोद शुक्ला, आजादनगर हरदोई उ.प्र.
36. कु विदिशा, सु श्री राजकमल रस्तोगी, इन्दिरा चौक बदायूं उ.प्र
37. श्री मनोज, सु. श्री जे.एस.विस्ट, पूर्वी ग्रेटर कैलाश दिल्ली
38. कु. सविता, सु. रमेश चन्द्र यादव, रानीबाजार, सहारनपुर
39. श्री हर्ष कुमार भनवाला, सैक्टर-1, रोहतक (हरि.)
40. श्री ईश्वरसिंह यादव, गुड़गांव, हरियाणा
41. श्री बलवान सिंह सोलंकी, शक्तिनगर, बहादुरगढ़
42. मा. हरिश्चन्द्र जी आर्य, टीकरी कलां, दिल्ली
43. श्री सोहनलाल जी मनचन्दा, शिवाजीनगर, गुड़गांव
44. श्री स्वदीप दास गुप्ता, जमशेदपुर, झारखण्ड
45. श्री अजयभान सिंह यादव, कानपुर, उ.प्र.
46. श्री अजयभान यादव, कानपुर सिटी, उ.प्र.
47. श्री नरेश कौशिक विधायक, बहादुरगढ़
48. श्री देवीदयाल जी गर्ग, पंजाबीबाग, नई दिल्ली
49. श्री आर.के. बेरवाल, रोहिणी, नई दिल्ली
50. पं. नत्थूराम जी शर्मा, गुरुनानक कॉलोनी बहादुरगढ़
51. श्री आर.के. सैनी, हसनगढ़, रोहतक
52. श्री राजकुमार अग्रवाल, मुल्तान नगर, दिल्ली
53. श्रीमती कुसुमलता गर्ग, दिलशाद गार्डन, दिल्ली
54. श्री बलवान सिंह, साल्हावास, झज्जर
55. श्री अजीत चौहान, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली
56. यज्ञ समिति झज्जर
57. श्री उम्मेद सिंह डरोलिया, काठमण्डी, बहादुरगढ़
58. श्री अम्बरीश झाम्ब, गुड़गाँव, हरियाणा
59. श्री गणेश दास एवं श्रीमती गरिमा गोयल, नया बाजार,दिल्ली
60. श्री राजेश आर्य, शिवाजी नगर, गुडगांव
61. मास्टर प्रहलाद सिंह गुप्ता, रोशन पुरा,गुडगांव, (हरियाणा)
62. श्री राजेश जी जून, उपचेयरमैन, जिला परिषद झज्जर
63. श्री अनिल जी मलिक, पूर्व उपाध्यक्ष, टीचर कॉलोनी बहादुरगढ़
64. द शिव टर्बो ट्रक यूनियन, बादली रोड, बहादुरगढ़
65. श्री राधेश्याम आर्य, रामनगर, त्रिनगर, दिल्ली
66. सुपरिटेन्डैन्ट नाहर सिंह, बिजवासन, दिल्ली
67. श्री राम प्रकाश गुप्ता व श्री राजेन्द्र प्रसाद गुप्ता, नजफगढ
68. श्री नकुल शौकीन, सैक्टर-23, गुड़गांव
69. श्री अपूर्व कुमार पुत्र श्री अम्बरीश झाम, हैरीटेज सिटी, डी. एल.एफ-2, गुड़गांव
70. श्रीमती सुशीला गुप्ता पत्नी श्री शत्रुघ्न गुप्ता, रांची झारखण्ड
71. श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह जी, आर्य सहरावत, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
72. श्री रवि कुमार जी आर्य, सैक्टर-6, बहादुरगढ़
73. श्री डॉ. सुरजमल जी दहिया, बराही रोड़, बहादुरगढ़
74. श्री कर्नल रविन्द्र कुमार जी चड्डा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली
75. श्रीमती रीटा चड्डा, सैक्टर-19 बी, द्वारका, दिल्ली
76. श्री राज सिंह दहिया, बराही रोड, बहादुरगढ़
77. श्री रविन्द्र हसीजा एवं श्री धर्मवीर हसीजा जी, साऊथ सिटी-1, गुरुग्राम, हरियाणा

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

– विद्या वाचस्पति वेदपाल वर्मा शास्त्री

भारत देश प्राचीन ऋषि-मुनियों का भारत है, वीर पुरुषों का देश भारत है। आज भी इस देश में सुभाष, चन्द्रशेखर, राजगुरु, सुखदेव, भगतसिंह, गुरु गोविन्द सिंह, गणेश शंकर विद्यार्थी, सावरकर अमर शहीद लेखराम तथा महात्मा श्रद्धानन्द सरस्वती जैसे अनेकों वीर शहीद पैदा हुए हैं युग निर्माण ऐसे ही महापुरुष किया करते हैं। सुख सुविधाओं में पलने वाले, साधनों की मांग करने वाले इतिहास नहीं बना सकते और न जनता के हृदय में अपना स्थान बना सकते हैं। कोई धनी आज तक युग निर्माता नहीं हुआ। महापुरुष ही युग निर्माता होते हैं।

जवानी में त्याग-तप और संयम का मार्ग अपनाना मुनियों महात्माओं का ही काम है। कल्याण मार्ग के पथिक स्वामी श्रद्धानन्द कहते थे-किसी समुदाय या उसके कुल के जीवन का अनुमान उसके त्याग-तप और बलिदान के आधार पर ही किया जाता है।

वह समुदाय या कुल धन्य है जिसके प्रवर्तकों या प्रचारकों ने अपने प्राणों का बलिदान देकर,अपना खून बहाकर देश की-मातृभूमि की या वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा की है। उनके अटल ईश्वर विश्वास की अकम्प आत्मा को ही वेद "अथर्व" कहता है।

देवता स्वरूप भाई परमानन्द की धमनियों में भी ऐसे ही त्यागी-तपस्वी बलिदानाओं का लहू बहता रहा है। उन्हें अपने रक्त रंजित कुल के वीर इतिहास पर बड़ा गौरव था। इसी विषय को आगे बढ़ाते हुए श्रद्धा से श्रद्धानन्द ने कहा था कि त्यागी-तपस्वी ही राष्ट्र का उद्धार कर सकता है। जिस देश में सम्पन्न वर्ग के प्राणी राष्ट्र-निर्माता होते हैं, संसार में उस जाति के बचने की कोई आशा नहीं है।

आर्य जगत् में स्वामी श्रद्धानन्द जैसा न तो कोई नेता उत्पन्न हो पाया है और न वैसा गुरुकुल का संचालक ही। स्वामी जी के कार्यकाल में देश भर में 10-15 गुरुकुल थे, तब विद्वानों के दल देश में सर्वत्र दिखाई देते थे। आज देश में गुरुकुल तो दिखाई देते हैं, किन्तु विद्वान कहीं दिखाई नहीं देते। विवेकशील विद्वानों का अभाव सा दिखाई दे रहा है। अधिक तर आर्यसमाजी वेदमन्त्रों के सामने अंग्रेजी अंक लिखने की प्राथमिकता दे रहे हैं।

देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी है। पिछली शताब्दी में ऐसे भी महापुरुष थे जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं थी। स्वयं स्वामी श्रद्धानन्द की मातृभाषा हिन्दी नहीं थी, महर्षि दयानन्द की भी मातृभाषा हिन्दी नहीं थी। दोनों महापुरुषों की प्रेरणा हिन्दी भाषा को मिली। गुरुकुल कांगड़ी ने वैज्ञानिक विषयों को हिन्दी माध्यम से पढ़ाया। रसायन शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, विद्युतशास्त्र, भौतिक शास्त्र विषयों की पाठ्यपुस्तकों को सर्वश्री महेशचरण सिन्हा और गोवर्धन शास्त्री ने तैयार की हिन्दी भाषा में। सभी विश्वविद्यालयों के अधिकारी इस हिन्दी व्यवस्था से चकित रह गये। कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग के प्रधान ने कहा था, मातृभाषा द्वारा उच्चशिक्षा देने के परीक्षण में गुरुकुल कांगड़ी को अभूतपूर्व सफलता प्राप्त हुई है। (साप्ताहिक आर्यजगत् रविवार 24 दिसम्बर, 1989)।

इस अभूतपूर्व सफलता को देखकर महात्मा गांधी ने महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय से कहा था, "गंगा के किनारे हरिद्वार के जंगलों में गुरुकुल खोलकर स्वामी श्रद्धानन्द हिन्दी के माध्यम से उच्चशिक्षा दे सकते हैं तो वाराणसी में गंगा के किनारे बैठकर आप इन बच्चों को रेक्स का पानी क्यों पिला रहे हैं।

आकर्षण के केन्द्र स्वामी श्रद्धानन्द ने 18 वर्ष गुरुकुल के आचार्य पद पर सुशोभित रहकर ब्रह्मचर्य प्रधान राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली का पुनरूद्वार किया। छात्रों में राष्ट्रीयता और निर्भीकता के भाव जागृत किये। राष्ट्र भाषा को समृद्ध कर, विदेशियों को भी आकर्षित किया है।

अपने दोनों पुत्रों हरिश्चन्द्र और इन्द्र को सबसे पहले गुरुकुल में भर्ती कराया और दोनों के साथ का विवाह जाति-पाति के बन्धनों को तोड़कर कराया साथ-साथ अपनी बेटी अमृतकला के साथ भी इसी प्रकार किया। 10 अक्टूबर 1888 को स्वामी जी अपनी डायरी में लिखते हैं मैं कचहरी से लौटकर घर आया तो बेटी वेदकुमारी जो भजन पाठशाला में याद

करके आई थी-मुझे सुनाने लगी-''**इक बार ईसा-ईसा बोल तेरा क्या लगेगा। मोल। ईसा मेरा राम रमैया ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया।**''

मैं चौकन्ना हुआ कि आर्य जाति की पुत्रियों को अपने धर्मगन्थों व महापुरुषों की निन्दा करनी भी सिखलाई जाती है। तभी निश्चय किया कि कन्या पाठशाला भी खोलनी चाहिए। नवम्बर 1888 को कन्या पाठशाला की स्थापना की ओर कदम बढ़ाया।

मैकाले की शिक्षा पद्धति भारतीयों को अंग्रेजों का मानसिक रूप से गुलाम बना रही थी। इसके प्रतिकार स्वरूप भारतीय परम्परा को जीवित रखने के लिए तथा जीवन के उंचे मानदण्डों को स्थापित करने के लिए गुरुकुल की स्थापना कर शिक्षा के क्षेत्र में एक युग का सूत्रपात कर स्वामी जी ने समस्त संसार को सिद्ध करके दिखा दिया कि भारतीय संस्कृति की शिक्षापद्धति विश्वमें सर्वश्रेष्ठ है। गोरी सरकार इस गुरुकुल के विस्तार को देखकर बड़ी चिन्तित रहती थी। इन गुरुकुलों को देश भक्तों का कारखाना समझकर विशेष निगाह रखती थी।

राष्ट्रभाषा हिन्दी की दयनीय दशा एवं मैकाले का शिक्षा पद्धति आज भी जीवित है। स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी जब भारत देश का प्रत्येक बुद्धिजीवि प्राणी मैकाले की इंगलिश पद्धति को समूल नष्ट कर दें। (रविवार 27 दिन, 1992 आर्य जगत्)

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुलमें ब्रह्मचारियों को अपना पुत्र मानते थे। प्रति मध्यरात्रि में छात्रावास में घूम-घूम कर देखते थे, मेरे पुत्रों को कोई कष्ट तो नहीं है। क्योंकि वे प्राय: ''**अथर्ववेद मन्त्र 11-5-94 आचार्यो मृत्युर्वरूणः सोम ओषधः पयः**'' का गान गाते रहते थे, जिसमें आचार्य ब्रह्मचारियों का (मृत्युरूपो), वरूण (जलरूप), सोम (चन्द्ररूप), ओषधि (अन्न आदि रूप) तथा पय (दूधरूप) होता है।

एक ब्रह्मचारी उत्सव में अपने पिता के न आने पर अत्यन्त उदास था। पता चलने पर महात्मा जी ने उसे अपने निवास पर बुलाया। उनसे मिलने के बाद ब्रह्मचारी हंसता हुआ लौटकर आया तो साथियों से बोला ''हम भी अपने पिता जी से मिलकर आ रहे हैं। ऐसी ही एक मार्मिक घटना रात्रि के 2 बजे की है जिसे कांगड़ी 1947 के वार्षिकोत्सव पर आचार्य प्रियव्रत जी सुना रहे थे। स्वामी जी छात्रावास में घूमकर निरीक्षण कर रहे थे। एक देवदत्त नामक ब्रह्मचारी को टाइफाइड बुखार में उल्टी हो रही थी। महात्मा जी ने दौड़कर उसकी उल्टी अपनी अंजलि में ली और उसे बाहर फेंककर देवदत्त के पैर और सिर को दबाने में लग रहे। ब्रह्मचारी के होश आने तक उसकी सेवा करते रहे। विद्यार्थियों को ऐसा सेवक गुरु पितृवत् आचार्य किसे कहाँ मिलेगा? (1902 में मुंशी अमन सिंह द्वारा प्रस्त 700 वीघा जमीन में)।

गंगा के उस पार घने कंटीले जंगल में 700 वीघा जमीन में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना हुई थी। उसकी पूर्व दिशा में कुछ गुंडे डकैत रहते थे। सुलताना नामक डाकू ने गुरुकुल में डाका डालने की सूचना पर, महात्मा ने सभी छात्रों को लाठी डण्डे और मशाल देकर चारों तरफ खड़ा कर दिया, स्वयं भी एक भाला लेकर खड़े हो गये। सुलताना ठीक दिये समय रात्रि के 2 बजे आया। जोर से पूछा-यह क्या हो रहा है। क्यों इतने लड़के हथियारों मशालों के साथ खड़े हैं। स्वामी जी ने आगे बढ़कर कहा-किसी सुलताना डाकू की सूचना पर अपनी रक्षा के लिए हम यहां उसका सामना करने को खड़े हैं। उसने कहा-सुलताना मैं ही हूँ-मुझसे तो पुलिस भी डरती है। श्रद्धानन्द ने कहा-यहाँ शिक्षा निःशुल्क होती है हम अपनी रक्षा स्वयं करते हैं। इस प्रकार स्वामी जी के तेजस्वी व्यवहार और वाक् पटुता से सुलताना बड़ा प्रभावित हुआ और घोड़े से उतरकर स्वामी जी के चरण छूकर क्षमा चाहता हुआ वापिस चला गया।

जैसे मैंने ऊपर लिखा है कि गौरी सरकार गुरुकुल कांगड़ी को देशभक्तों का कारखाना समझाकर इस पर विशेष निगाह रखती थी। इसकी सूचना, इंग्लैण्ड तक जासूसों द्वारा पहुंचती रहती थी। सन् 1914 में भावी प्रधानमन्त्री सर रैम्जे मैकडानल दीनबन्धु एन्डुज के साथ पुराने गुरुकुल में पहुंचे और स्वामी श्रद्धानन्द से पूछा सुना है यहां इस जंगली गुरुकुल में बम बनाये जाते हैं। स्वामी जी के हाँ करने पर उन्हांने कहा-वे बम हम देख सकते हैं। स्वामी जी ने हाँ कहकर एक घण्टा बजवा दिया। तुरन्त 600 युवा ब्रह्मचारी पंक्ति बद्ध उनके सामने आकर नमस्ते करते

हुए बैठ गये। थोड़ी ही देर में सर रैम्जे मैकडानल ने कहा हम तो बम बनाने की आपकी फैक्ट्री (कार्यशाला) देखना चाहते है। स्वामी जी ने कहा-श्रीमान् जी। यही मेरे बम हैं जो समय आने पर देश की आजादी के लिए कई-कई सौ बमों का काम करेंगे। अब तो ये भारतीय संस्कृति के ऋषि-ऋषियों की वेद संस्कृति मे शिक्षित हो रहे हैं। इनकी उच्च-शिक्षा का माध्यम हिन्दी भाषा है-अंग्रेजी भाषा नहीं। ये वेद भी पढ़ते हैं।

मैकडानल दीनबन्धु एन्डुज की ओर देखकर मुस्करायें और तुरन्त स्वयं अपने हाथ से स्वामी श्रद्धानन्द जी का चित्र खींचकर उनकी प्रशंसा करते हुए वहाँ से चल दिये।

स्वामी श्रद्धानन्द निराली वीरता के प्रतीक थे। उनकी वीरता में एक विशेष तेजोमय निरालापन था। इसके सम्बन्ध में लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल गृहमन्त्री भारत सरकार ने कहा था-"स्वामी श्रद्धानन्द जी की याद आते ही 1919 में चांदनी चौक दिल्ली वाला दृश्य आंखों के सामने आ जाता है। वहां निहत्थी जनता के जलूस पर गोरे सिपाही फायर करने की तैयारी में हैं। स्वामी जी छाती खोलकर आगे आते हैं और कहते हैं-लो चलाओ गोलियां। इस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं होता। -रविवार 24 दिसम्बर, 1989 आर्य जगत् स्वामी श्रद्धानन्द बलिराम दिवस)

इस घटना पर अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के अभिनन्दन में विद्वान वीरपुरुषों ने लिखा:-

इस मुल्क के चमन को चश्मेतर से सींचा,
इल्मो हुनर से सींचा कभी मालोजर से सींचा।
श्रद्धा बयां करें क्या कुर्बानियां तुम्हारी,
जब वक्त आ पड़ा तो खून जिगर से सींचा।

इस वीर, भारतीय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुरोधा संन्यासी ने महात्मा गांधी की मुस्लिम तृष्टिकरण की दुर्नीति के विरोध में कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया। आज के मुलायम सिंह यादव की सिमी की पालक नीति से, सिमी आतंकवादी देश के कौने-कौन में पाकिस्तान परस्ती बनकर आग लगाकर देश को बर्बाद कर रहे हैं। इसी प्रकार भारत देश की आजादी में लिप्त 23 दिसम्बर, 1926 में एक मदान्ध मुस्लिम युवक अब्दुल रशीद ने नया बाजार में रूग्णावस्था में पड़े वीर संन्यासी पर 3 गोली चलाकर उन्हें सदा के लिए राष्ट्र से छीन लिया था।

स्वामी जी के अदम्य साहस, गुरुकुल प्रणाली के सफल संचालन निर्भीकता, स्पष्टवादिता आदि गुणों के कारण सभी देशवासी उनसे प्रभावित थे। जहां लाखों मुस्लिमों की सदारत में इस महामना महात्मा ने फतेहपुरी मस्जिद के बुर्ज पर खड़े होकर वेदमन्त्र से भारत वीरों से अंग्रेजी सल्तनत को उखाड़ने की भूमिका की प्रबल स्थापना की थी उस महात्मा को भारत वीरों का शतवार नमन।

क्या आप जानते हैं

1. लम्बे-लम्बे नाखून बढ़ाना और उन पर नेल पॉलिश लगाना हानिकारक है।

2. गैस या स्टोव की नंगी लौ पर कोई चीज भूनकर या सेक कर खाना हानिकारक है, क्योंकि खाने की वस्तु में दुर्गन्ध भर जाती है और स्वाद खत्म हो जाता है।

3. चाय की पत्ती को बार-बार उबाल कर पीना हानि कारक है। इसे जितना उबालेंगे उतना ही टेनिन नामक विष अधिक छोड़ती है।

4. नाईलान के चमकदार वस्त्र पहनना चर्म रोगों को निमन्त्रण देना है।

5. धूम्रपान या मद्यपान करना अपने पांव पर स्वयं कुल्हाड़ी मारना है।

6. पोलिथिन (प्लास्टिक) की थैलियों में जूस दही वगैरह रखने से प्रतिक्रिया होती है।

7. अधिक चीनी और नमक खाना शरीर को वृद्ध बनाना है।

8. मीट मछली, अण्डे मनुष्य का भोजन नहीं है। इनको खाने से शरीर में अनेक प्रकार के भयंकर रोग लग जाते हैं।

9. ऊंची एड़ी के सैन्डल, चप्पल पहनकर चलने से कमर दर्द, सिर दर्द और आंखों पर कुप्रभाव पड़ता है।

-देवराज आर्य मित्र, वैद्य विशारद

हमें इन पर नाज क्यों ना हो?

- राजबीर आर्य

आज आर्य विद्वान बहुत चिन्तित हैं कि हमारी सन्तानें आर्य नहीं बन रही हैं, जिसमें चिन्तन यह भी रहता है कि हमारी तीसरी पीढ़ी आर्य समाजी हो, चौथी-पीढ़ी तो दूरबीन लगाकर ही ढूंढनी पड़ेगी। आईए आपको दूरबीन की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, मैं एक ऐसे परिवार और उसके मुखिया के विषय में लिख रहा हूँ, जिससे हम भी प्रेंरणा प्राप्त कर सकें। इस लेख के माध्यम से मैं ऐसे विशुद्ध आर्य व्यक्तित्व के विषय में आपको परिचित करा रहा हूँ जिसको भारतवर्ष का लगभग हर आर्य नाम से जानता है। जब कभी मेरे जेहन में यह चिन्तन आता है कि ऐसा कौन व्यक्ति है जो विद्वान भी हो, दानी, लेखक एवं वक्ता के साथ-साथ नम्र और सरल भी हो, सामाजिक हो, तो मेरे हृदय पटल पर सम्माननीय ज्येष्ठ भ्राता श्री कन्हैयालाल आर्य जी का नाम आता है। आज जिस परिवार में पंच महायज्ञों की प्राचीन परम्परा गुंजायमान है, तो वह परिवार माननीय श्री कन्हैया लाल जी आर्य का है। इनके पिता स्व. महाशय रामचन्द्र जी आर्य को कौन नहीं जानता? बहुत ही विषम परिस्थितियों से गुजरते हुए, संघर्ष करते हुए भी सन्तान निर्माण के दायित्व को किस भांति से निभाया। यह स्व. माता जमना देवी आर्या और सरलता की प्रतिमूर्ति भाई कन्हैया लाल आर्य जी के अतिरिक्त कौन जान सकता है? हम तो उन दोनों पवित्र आत्माओं के ऋणी हैं जिन्होंने ऐसे पुत्र रत्न को पैदा दिया। कहते हैं जब विद्या, धन और पद आते हैं, तो ये तीनों अपने मित्र अहंकार को भी साथ लाते हैं। आईए लगे हांथ संक्षिप्त से अहंकार के लक्षणों का वर्ण करते हैं।

नं.1: अहंकारी व्यकित धन, विद्या और बल में अपने से बड़ा किसी को नहीं समझता है।

नं.2: उसकी भाषा में बोलने के ढंग में अचानक परिवर्तन हो जाता है।

नं.3: नम्रता और सरलता छूमंतर हो जाती है लेकिन मेरा भाई ज्यों-ज्यों बड़ा होता गया, कान्हा से कन्हैया लाल बनता चला गया। ठीक उसी तरह जैसे पेड़ फल लगने पर भूमि के और अधिक समीप होता चला जाता है। जब भाई जी को 18 नवम्बर 2018 को ऋषि कृत परोपकारिणी सभा का मन्त्री बनाया गया और 20 नवम्बर 2018 को

पूज्यपाद स्वामी धर्ममुनि जी का जन्म-उत्सव जो आत्मशुद्धि परिसर में मनाया जा रहा था, जिस ट्रस्ट के आप उप-प्रधान भी हैं, तो मैंने देखा कि भाई जी की गर्दन नीची और चेहरे से अत्यन्त जिम्मेवारियों को निभाने की झलक साफ दिखाई दे रही थी। वे सोच रहे थे कि आर्य जगत ने मुझ पर जो विश्वास किया है परमपिता मुझे उस कसौटी पर खरा उतरने की बुद्धि, विद्या, ईमानदारी, धन व अन्य सामर्थ्य प्रदान करने की कृपा दृष्टि बनाये रखे और मन ही मन सोच रहे थे। कान में कहते गये फूल मुरझोये हुए, कन्हैया फूल न जाना ऋषि कृत सभा का मन्त्री पद पाकर।

जहाँ श्री कन्हैया लाल आर्य जी ने स्वयं को नीचे से उठाकर शिखर तक पहुँचाया। आपने एम. ए, हिन्दी, संस्कृत, अर्थशास्त्र व एम.कॉम चार विषयों में, प्रथम श्रेणी से परिक्षायें पास की। आपने बी.एड. की परीक्षा भी उतीर्ण की पूर्व प्रधानाचार्य के पद से आप सेवानिवृत हुए। आपको शिक्षा की उल्लेखनीय सेवाओं के कारण शिक्षक गौरव से सम्मानित किया गया। एम.ए, संस्कृत पंजाब विश्वविद्यालय की परीक्षा में गोल्ड मैडल प्राप्त करने पर तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जी द्वारा सम्मानित किया गया।

एक ऊर्जावान व्यक्तित्वः श्री कन्हैया लाल जी एक ऊर्जावान व्यक्ति हैं। 76 वर्षीय यह नौजवान आज के नवयुवकों से भी ज्यादा कार्य कर लेता है। गुरुग्राम में हवन कने वाले पण्डित जी के

नाम से आप प्रसिद्ध हैं। क्या आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा जिसके आप उप-प्रधान हैं, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ व फर्रूखनगर, परोपकारिणी सभा अजमेर व अन्य गुरुकुलों व सभाओं के उत्सवों व अन्य बैठकों के लिए आप जो भागदौड़ करते हैं उल्लेखनीय, प्रशंसनीय व अनुकरणीय है।

दानवीर: पढ़ते व सुनते आये हैं कि ब्राह्मण का एक कार्य दान लेना व दान देना भी है। यह मेरा भाई तो विचित्र ब्राह्मण है। यह स्वयं कि जेब खाली करके फिर दूसरों की जेबों पर हमला बोलकर जो राशि प्राप्त होती है, वह प्राकृतिक आपदाओं से लेकर संस्थानों व आर्य प्रांतीय सभाओं, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों तक अत्यन्त मात्रा में पहुँचाई जाती है। हमने दानी सुनें भी हैं और देखे भी हैं लेकिन स्वयं दान देना और दूसरे से भी दान लेकर देने वाले बहुत कम सज्जन मिलते हैं। आपके पास हर समय अनेकों संस्थाओं की रसीद बुक रहती है और मजाक में लोग कहते हैं लो भिखारी आ गया लेकिन क्या करें विवश हो जाते हैं जब पहली रसीद इसकी अपनी कटी हुई होती है।

अभिमान रहित जीवन: आपका सारा का सारा जीवन सादगी, सरलता व सौम्यता का प्रतीक रहा है। अभिमान चाहे वह विद्य है, पद या धन है, आपसे कोसों दूर है। सभी से बड़ी विनम्रता से मिलते व वार्तालाप करते हैं यह एक विशेष गुण मैंने इनमें देखा है जो हमें भी प्रेरणा देता है।

सारा का सारा परिवार याज्ञिक है:- जैसा कि मैंने प्रारम्भ में ही कहा था कि आज हमारा विद्वत समाज इस विषय को लेकर बड़ा चिन्तित है कि आर्यो के बच्चे आर्य नहीं बन रहे। बड़े गर्व व प्रशंसा की बात है कि महाशय रामचन्द्र आर्यजी से लेकर श्री कन्हैया लाल की धर्मपत्नी बहन चन्द्रवती आर्या से लेकर दोनों पुत्र, पुत्र वधुए व सुपौत्र एवं सुपौत्रियां सबके सब आर्य समाजी हैं। मिल बैठकर संध्या हवन आदि का कार्य करते हैं। समय-समय पर घर में संन्यासियों व विद्वानों के प्रवचन सारा परिवार मिलकर बड़े श्रद्धा व प्रेम के साथ आयोजित करता है। आर्य बन्धुओं लिखने व पढ़ने में बात सामान्य लग रही है लेकिन विचार करने पर इसके महत्व का पता लग जायेगा की यह कन्हैया लाल आर्य जी की बहुत बड़ी उपलब्धि है।

सत्यार्थ प्रकाश प्रश्नोत्तरी: यद्यपि 250 से ज्यादा लेख पत्रिकाओं में तथा अन्य कई पुस्तकें आर्य जी द्वारा लिखी गई हैं। परन्तु सत्यार्थ प्रकाश प्रश्नोतरी नाम ग्रंथ की प्रशंसा सभी आर्यो द्वारा की गई है। मैं भी इस लेख के माध्यम से निवेदन करता हूं कि सभी आर्यो को इसका अध्ययन करना चाहिए विशेषतया नवयुवकों को इस पुस्तक को पढ़ना चाहिए।

माननीय आर्य जी को समाज के प्रति उनकी सेवाओं को देखते हुए बहुत से पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। जिनमें सर्वश्रेष्ठ शिक्षक सम्मान, श्रेष्ठ प्रबन्धक पुरस्कार, सार्वदेशिक आर्य वीर दल, यज्ञ श्रेष्ठी पुरस्कार, माता कमला आर्या दिल्ली, गौधन श्रेष्ठी पुरस्कार, यज्ञ रत्न पुरस्कार, अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन 2012 से अभिनन्दन पत्र आदि-आदि बहुत सारी संस्थाओं द्वारा आपको सम्मानित किया जा चुका है। ऋषि दयानन्द के मिशन के प्रति जो समर्पण भाव, लगन, उत्साह, निष्ठा और निष्काम सेवा भाव आपके अन्दर देखा है, मैं उस सर्वशक्तिमान से प्रार्थना करता हूँ कि यह भाव और लगन आपकी कम ना होने पावे, सदैव बनी रहे। आपका जीवन स्वस्थ और दीघायु वाला हो, यह मंगल कामना भी मैं उस परवरदीगार से करता हूँ। ज्येष्ठ और श्रेष्ठ भ्राता की सेवा में दो पंक्तियाँ है:-

हम तो बिक जाते हैं, उन अहले कर्मो के हाथों,
जो करके अहसान भी नीची नजर रखते हैं।

आपसे अनुरोध है कि आप अपने अप्रकाशित प्रेरणादायक लेख तथा कविता टाईप की हुई सामग्री आप ईमेल **atamsudhi@gmail.com** पर भिजवा सकते हैं। इसके लिए मैं आपका अत्यन्त आभारी रहूंगा। **-विक्रमदेव शास्त्री**

आश्रम द्वारा संचालित विविध प्रकल्पों हेतु 500/- से अधिक प्राप्त दान सूची

दान सुची

यूकोहामा इंडिया प्रा.लि. सैक्टर-4 बी, बहादुरगढ़	63000/-
श्री नरेन्द्र कुमार जी सुपुत्र दलीप सिंह वैद्य टीकरी दि.	30000/-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा महासम्मेलन-18, न.दि.	11000/-
अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ नई दिल्ली	10000/-
श्री आदित्य सिंह सुपुत्र डॉ. अभिषेक नलोढ़ी झज्जर	5100/-
श्री रामचन्द जी मलिक वेदान्त नगर परनाला रोड, बहा.	5100/-
श्री दर्शन कुमार जी अग्निहोत्री प्रीत विहर दिल्ली	5000/-
प्रिं कर्ण सिंह जी डाबास माजरा दिल्ली	4100/-
श्रीमती अंजलि पत्नी श्री अभिषेक सैक्टर-6, बहादुरगढ़	2100/-
श्री कन्हैया लाल जी आर्य शिवाजी नगर, गुरुग्राम हरि.	2100/-
श्री राम प्रताप आर्य जी नरवाना, हरियाणा	2100/-
सुनंदा जी देहरादून	2100/-
श्री कर्नल राजेन्द्र सिंह सहरावत सैक्टर-6, बहादुरगढ़	2100/-
श्री स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी महाराज देहरादून, उत्तराखण्ड	2100/-
श्री कमलेश कुमारी धर्मपत्नी श्री सुरेन्द्र कुमार विन विजयलक्ष्मी अपार्टमेन्ट दिल्ली	2100/-
श्री वेद प्रकाश जी आर्य उत्तम नगर, दिल्ली	2000/-
श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा जी कीर्तिनगर दिल्ली	1500/-
श्री सतीश जी छिकारा सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1100/-
श्री संदीप कुमार जी आर्य नगर, बहादुरगढ़	1100/-
श्री प्रदीप सिवान जी सैक्टर-2, बहादुरगढ़	1100/-
श्री हितेश जी सुपुत्र श्री हरदीप सिंह खत्री सैक्टर-7,बहा.	1100/-
श्री तुषार जी गुलिया काठमण्डी बहादुरगढ़	1100/-
कुमारी मेघाली सुपुत्री श्री बिजेन्द्र पारासर बहादुरगढ़	1000/-
श्री रविन्द्र कुमार श्री धर्मवीर हसीजा साउथ सिटी, गु.	1000/-
श्री कपिल जी दहिया धर्मविहार, बहादुरगढ़	551/-
श्रीमती प्रेमरानी शर्मा पत्नी श्री पं. रामदर्शन बहादुरगढ़	551/-
श्री मनुदेव जी वानप्रस्थी वैदिक वृद्धाश्रम बहादुरगढ़	501/-
श्री करतार सिंह जी आर्य श्री टीकरी कलां दिल्ली	500/-
श्री मा. हरिसिंह जी दहिया बराही रोड, बहादुरगढ़	500/-
श्री शिवनारायण जी लाहोटी कीर्तिनगर, दिल्ली	500/-
श्री राजकुमार आनन्द कीर्तिनगर, दिल्ली	500/-
श्री प्रियरत्न गुप्ता जी एच.एन.जी., बहादुरगढ़	500/-
श्री शशि भूषण गर्ग जी सैक्टर-9, बहादुरगढ़	500/-
श्री राजवीर जी आर्य धर्मविहार, बहादुरगढ़	500/-
श्री डॉ. दीवानचन्द आर्य धर्म विहार, बहादुरगढ़	500/-
श्री रमेश जी राठी गऊसेवक बहादुरगढ़	500/-
श्री सत्यपाल वत्स आर्य काठमण्डी बहादुरगढ़	500/-
श्री रविन्द्र गुप्ता जी गुप्ता मोटर स्टोर, बहादुरगढ़	500/-
कु. इन्दु कटारिया भाग्य विहार दिल्ली	500/-
श्री रामबीर सुपुत्र श्री रणधीर सिंह राठी बहादुरगढ़	500/-
श्री शीलचन्द जी ग्राम कसार बहादुरगढ़	500/-
श्री मोहित कादियान सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्रीमती माया विश्वास ईसगांव, कैम्प तेलगांना	500/-
सास्वत सुपुत्र श्री अभिमन्यु जी आर्य धर्म विहार, बहा.	500/-

गौशाला हेतु दान

श्रीमती प्रेमरानी शर्मा पत्नी श्री पं. रामदर्शन शर्मा जी महावीर पार्क, बहादुरगढ़	551/-
श्री रमण नरूला सैक्टर-6, बहादुरगढ़	500/-
श्री सतीश जी वर्मा ओमैक्स सिटी, बहादुरगढ़	500/-
श्री तिलक राज जी नागपाल गुरुग्राम हरियाणा	500/-

विविध वस्तुएं

अक्षिता-राविश धर्मविहार, बहादुरगढ़	80 किलो गेहूं
पुरी ऑयल मील बहादुरगढ़	1 टीन सरसों तेल
श्री अशोक कुमार जी दहिया सैक्टर-9, बहा.	48 कापियां, 50 पैन, 50 पैंसिल
श्रीमती विमला देवी पत्नी श्री दलबीर सिंह जी बलारा बहादुरगढ़	बच्चों के जूतों के लिए 5100/-
श्री शुक्ला जी नैन पाल मन्दिर टिकरी कलां दिल्ली	1 टीन सरसों तेल

विशिष्ट भोजन एक समय का देने वाले

श्री मोहित कादयान जी सैक्टर-6, बहादुरगढ़	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री दीपक सुपुत्र श्री हरस्वरूप जी सोनीपत हरियाणा	1 समय का विशिष्ट भोजन
यमीन कुमारी पत्नी श्री अशोक कुमार सैक्टर-9,बहादुरगढ़	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्रीमती रश्मि देवी पत्नी श्री आलोक रज्जन बहादुरगढ़	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री कृष्ण जी मुदगल कसार	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री नरेश दराल जी टीकरी कलां दि.	1 समय का विशिष्ट भोजन
कैप्टन महेन्द्र सिंह जी पवार बहा.	1 समय का विशिष्ट भोजन
महिला मण्डली नई बस्ती बहादुरगढ़	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री महेन्द्र जी सेठी झज्जर	1 समय का विशिष्ट भोजन
श्री कृष्ण लाल जी दिल्ली	1 समय का विशिष्ट भोजन

आपकी सुविधा हेतु

आप आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़ द्वारा संचालित विभिन्न प्रकल्पों हेतु अपना पावन दान निम्नलिखित खाते में सीधा जमा कराकर पुण्य के भागी बन सकते हैं–

बैंक	नाम व खाता संख्या	बैंक कोड संख्या
इलाहाबाद बैंक, रेलवे रोड, बहादुरगढ़,झज्जर	आत्म शुद्धि आश्रम 20481946471	IFSC-ALLA0211948

मुद्रक व प्रकाशक : स्वामी धर्ममुनि 'दुग्धाहारी', सम्पादक एवं मुख्याधिष्ठाता-आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, जिला-झज्जर (हरियाणा), पिन-124507 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली-110005, दूरभाष-41548503, चलभाष-9810580474 से मुद्रित, आत्म-शुद्धि-पथ कार्यालय-आत्मशुद्धि आश्रम से 15 दिसम्बर 2018 को प्रकाशित एवं प्रसारित।

मुख्याधिष्ठाता स्वामी धर्ममुनि जी दुग्धाहारी के जन्मोत्सव की झलकियां

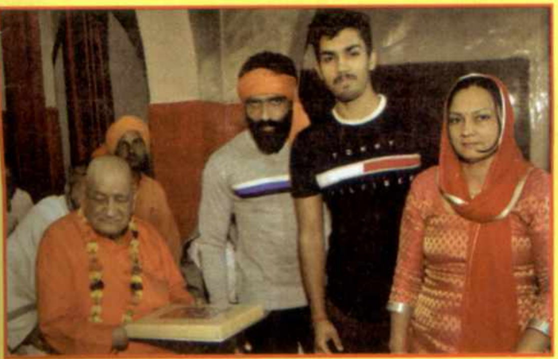

आत्म – शुद्धि – पथ मासिक

दिसम्बर 2018

छपी पुस्तक – पत्रिका

एच.ए.आर.एच.आई.एन/2003/9646

पंजीकरण संख्या पी/रोहतक-035/2018-20

प्रेषक – आत्मशुद्धि आश्रम

बहादुरगढ़, झज्जर (हरियाणा)-124507

सेवा में -

आत्मशुद्धि आश्रम की चित्रमय झलकियां

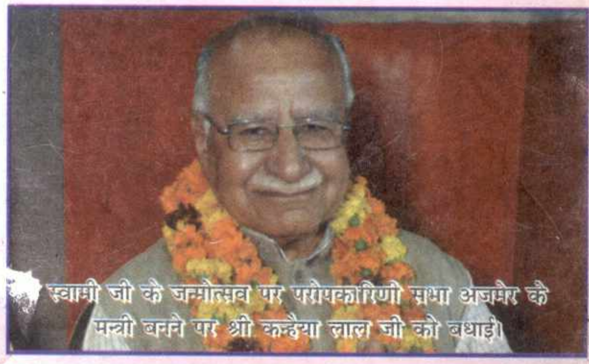

स्वामी जी के जन्मोत्सव पर परोपकारिणी सभा अजमेर के मन्त्री बनने पर श्री कन्हैया लाल जी को बधाई।

श्री दिलीप सिंह जी टीकली कलां को घड़ी एवम् फुल मालाओं से सम्मानित करते स्वामी धर्ममुनि जी, आचार्य चांद सिंह जी, श्री हरिश मुनि जी

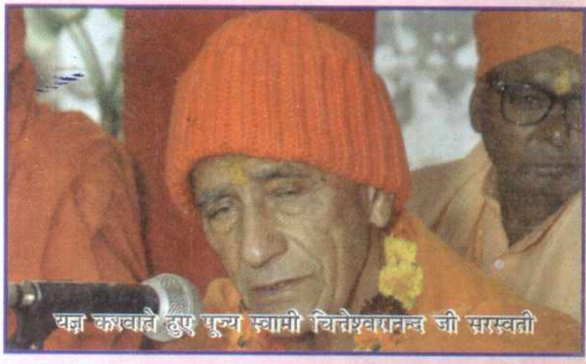

यज्ञ करवाते हुए पूज्य स्वामी चित्तेश्वरानन्द जी सरस्वती

मुख्य यजमान श्री सुरेन्द्र जी श्रीमती विमल बुद्धिराजा कीर्तिनगर, नई दिल्ली

मुख्य यजमान श्री भगवान जी श्रीमती निर्मला देवी लाहोटी कीर्तिनगर नई दिल्ली

मुख्य यजमान श्री कर्नल राजेन्द्र जी सहरावत सैक्टर-6, बहादुरगढ़ को आशीर्वाद देते हुए श्रद्धालुगण